मैं तुम्हारे लिये क्या लाऊॅ

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Mein Tumhare Liye Kya Laon (What Should I Bring For You)
Cover Page picture : Rose Flower
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
To read many such stories : https://www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

फरवरी 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
मैं तुम्हारे लिये क्या लाऊँ 5
1 एक बुढ़िया की खाल 7
2 फ़ैनिस्ट वाज़ 15
3 सुन्दरी और जानवर 32
4 नौजवान दासी 53
5 सिन्डरैला–1 64
6 सिन्डरैला–2 80
7 हरा नाइट 98

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

मैं तुम्हारे लिये क्या लाऊँ

हमने बहुत सारी लोक कथाऐं इकट्ठी की हैं। उनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं ऐसी भी हैं जिनमें कुछ लोग घर से बाहर गये हैं और उन्होंने घर में रहने वालों से यह पूछा है कि "मैं तुम्हारे लिये क्या लाऊँ"। अक्सर करके ये लोग पिता हैं और उन्होंने यह सवाल अपनी बेटियों से पूछा है और उनकी बेटियों ने भी उनसे अपनी अपनी पसन्द के अनुसार कुछ कुछ लाने के लिये कहा है।

उनमें से कई पिताओं को उनकी पसन्द की चीज़ें मिल भी गयी हैं और कइयों को नहीं भी मिलीं। आओ देखते कि इन लोक कथाओं में बेटियों ने अपने अपने पिता से क्या क्या माँगा है उनको भी क्या क्या मिला है और क्या क्या नहीं मिला। और अगर मिला भी तो उनको क्या फायदा हुआ या फिर वे किस परेशानी में पड़ गये।

1 एक बुढ़िया की खाल[1]

मैं तुम्हारे लिये क्या लाऊँ जैसी लोक कथाओं की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है। इस लोक कथा में एक राजकुमारी को अपनी मनपसन्द चीज़ मँगवाने पर कैसी सजा मिलती है यह देखने वाली बात है।

यह कुछ पुरानी बात है कि एक देश में एक राजा राज करता था। उसके तीन बेटियाँ थीं।

एक बार वह एक मेले में जा रहा था तो जाने से पहले उसने अपनी तीनों बेटियों से पूछा कि वह मेले से उनके लिये क्या ले कर आये।

उसकी सबसे बड़ी बेटी बोली कि उसको एक रूमाल चाहिये। उसकी दूसरी बेटी बोली कि उसको बहुत बढ़िया जूता चाहिये। उसकी तीसरी और सबसे छोटी बेटी बोली कि उसको एक डिब्बा नमक चाहिये।

दोनों बड़ी बहिनें अपनी सबसे छोटी बहिन से बहुत जलती थीं सो उन्होंने अपने पिता से कहा — "पिता जी आपको पता है कि यह बेवकूफ लड़की आपसे नमक क्यों मँगवा रही है? क्योंकि यह आपका अचार डालना चाहती है।"

---

[1] The Old Woman's Hide (Story No 70) – a folktale from Italy from its Montale area.
Adapted from the book "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin, 1980.

पिता बोला "अच्छा तो वह मेरा अचार बनाना चाहती है। क्या सचमुच में? ठीक है। अगर इसका ऐसा ही इरादा है तो मैं इसको बाहर निकाल दूँगा।"

और उसने उसको एक दासी के साथ एक सोने के सिक्कों का बटुआ दे कर बाहर निकाल दिया। सारे आदमी और नौजवान तो नौजवान लड़कियों को तंग करने वाले होते ही हैं सो उस बेचारी लड़की को यही पता नहीं था कि वह जाये कहाँ।

वे दोनों एक कब्रिस्तान से गुजर रहे थे कि दासी ने देखा कि एक सौ साल की बुढ़िया अभी अभी मरी थी और लोग उसको वहाँ दफना रहे थे। उसको देख कर दासी को एक विचार आया।

दासी कब्र खोदने वाले के पास गयी और उससे पूछा — "क्या तुम हमको इस बुढ़िया की खाल बेचोगे?"

कब्र खोदने वाला बोला "यह मैं कैसे कर सकता हूँ?"

काफी पीछे पड़ने के बाद वह उस बुढ़िया की खाल उनको बेचने पर राजी हो गया। उसने चाकू लिया, उस बुढ़िया की खाल निकाली और उसके चेहरे, सफेद बाल, उँगलियों और नाखूनों के साथ उसकी पूरी खाल उसने उन लोगों को बेच दी।

दासी ने उस खाल का चमड़ा बनाया उसको कपड़े की तरह से सिला और उसको उस लड़की को पहना दिया। उस खाल को पहन कर वह लड़की अब बिल्कुल बुढ़िया लगती थी पर...

अब लोग उस बुढ़िया को देखते नहीं थकते थे। क्यों? क्योंकि इतनी बुढ़िया होने के बावजूद उसकी आवाज घंटी की तरह साफ थी।

अब उनको किससे मिलना था – राजा के बेटे से। सो वे दोनों एक ऐसे राजा के महल में गयीं जिसके एक ही बेटा था। जब वे राजा के बेटे से मिली तो उसने दासी से पूछा — "यह तो बताओ कि वह बुढ़िया कितनी बूढ़ी है।"

दासी बोली — "यह आप उसी से पूछ लीजिये न।"

राजकुमार ने उस लड़की से पूछा — "दादी, क्या आप मेरी बात सुन सकती हैं? आपकी क्या उम्र होगी?"

लड़की ने हॅस कर जवाब दिया — "मेरी उम्र एक सौ पन्द्रह साल की है।"

"ओह मेरे भगवान। और आप आयीं कहॉ से हैं?"

"अपने शहर से।"

"आपके माता पिता कौन थे?"

"मैं अपनी माता पिता खुद ही हूॅ।"

"और आप करती क्या हैं?"

"कुछ नहीं, बस आनन्द करती हूॅ।"

राजकुमार को यह सब सुन कर बहुत मजा आया। उसने राजा और रानी से कहा — "पिता जी हम इस बुढ़िया को अपने महल ले

चलते हैं। जब तक यह ज़िन्दा रहेगी तब तक यह हमारा दिल बहलाती रहेगी।"

दासी ने उस लड़की को महल में छोड़ दिया और वहाँ से चली गयी। वहाँ उन्होंने उस बुढ़िया को सबसे नीचे वाले छज्जे पर एक कमरा दे दिया और वह लड़की वहाँ रहने लगी।

अब जब भी वह राजकुमार खाली होता और अपना दिल बहलाना चाहता तो वह उस बुढ़िया के पास पहुँच जाता, उससे बातें करता और उसकी उलटी सीधी बातों पर हँसता।

उन्होंने उस लड़की को उसकी बूढ़ी आँखों की वजह से "सड़ी हुई आँखों वाली" नाम दे दिया।

एक दिन रानी ने उस "सड़ी हुई आँखों वाली" से कहा — "कितनी बुरी बात है कि तुम अपनी इन धुँधली आँखों से कुछ भी नहीं कर सकतीं।"

सड़ी आँखों वाली ने जवाब दिया — "पर मैं एक लड़की की तरह से धागा कात सकती हूँ।"

इस पर रानी बोली — "तो लो यह थोड़ी सी अलसी[2] की रुई लो और इसको कात कर देखो – बस समय गुजारने के लिये और कुछ करने के लिये। कोई खास बात नहीं अगर न भी कर सको तो।"

[2] Translated for the word "Linseed or Flaxseed" – see its picture above.

जैसे ही रानी वहॉ से गयी और वह लड़की अपने कमरे में अकेली रह गयी तो उसने अपना दरवाजा बन्द किया और अपनी बुढ़िया वाली खाल उतार दी।

फिर उसने उस अलसी की रुई का इतना बढ़िया धागा काता जैसा कि कभी किसी ने देखा भी नहीं होगा। उस धागे को देख कर राजा, रानी, राजकुमार और सारे दरबारी आश्चर्यचकित रह गये कि उस बुढ़िया ने जो हमेशा हिलती रहती थी और आधी अन्धी थी उस उम्र में भी उसने इतना बढिया धागा काता।

अब रानी ने उसको एक कपड़ा दिया और उससे कहा कि वह उसका एक ब्लाउज़ बनाये। अगर वह आसानी से बना सकती है तभी बनाये और नहीं बना पाये तो कोई बात नहीं। उसके लिये उसको चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं।

फिर वह जैसे ही अपने कमरे में अकेली हुई उसने कपड़ा काटा और उसका एक ब्लाउज़ सिल दिया।

फिर उसने उस पर आगे की तरफ बहुत ही सुन्दर और बारीक सुनहरे फूलों वाली कढ़ाई कर दी। लोगों को तो पता नहीं चला कि वह उसके बारे में क्या सोचें पर राजकुमार को कुछ शक हो गया।

अगली बार जब उस बुढ़िया ने दरवाजा बन्द किया तो राजकुमार ने सोचा कि वह उसका भेद पता लगा कर ही रहेगा।

सो जब उस बुढ़िया ने अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया तो राजकुमार ने उस कमरे के चाभी के छेद से उसके अन्दर झाँका तो लो उसने क्या देखा कि उस बुढ़िया ने अपनी बुढ़िया वाली खाल उतारी और वहाँ तो बहुत सुन्दर सूरज की तरह चमकती हुई एक नौजवान लड़की खड़ी थी।

यह देख कर राजकुमार ने तुरन्त ही वह दरवाजा तोड़ दिया और अन्दर जा कर उस लड़की को गले लगा लिया। अचानक इस सबको देख कर वह लड़की चौंक गयी और कुछ झिझक भी गयी। उसने अपने आपको ढकने की बहुत कोशिश की पर सब बेकार।

राजकुमार ने पूछा — "तुम कौन हो और तुमने इस तरह से अपना वेश क्यों बदल रखा है?"

तब उस लड़की ने उसको अपनी कहानी सुनायी और कहा कि वह भी उसी की तरह एक राजा की बेटी है और उसके पिता ने उसको महल से बाहर निकाल दिया है।

राजकुमार तुरन्त ही अपने माता पिता के पास गया और बोला — "माँ, पिता जी, मैंने शादी के लिये एक राजा की बेटी ढूँढ ली है और अब मैं उससे शादी करने वाला हूँ।"

बस शादी की तैयारियाँ होने लगीं। आस पड़ोस के सारे राजा और रानियाँ शादी में बुलाये गये। इनमें लड़की के पिता को भी बुलाया गया पर वह अपनी बेटी को परदे के पीछे और ताज पहने देख कर पहचान नहीं सका।

लड़की ने अपने पिता के लिये खास तरीके से अलग खाना बनवाया। उसमें नमक नहीं था।

सूप लाया गया और सब लोगों ने पिया और उसकी बहुत तारीफ की पर उसके पिता ने वह सूप केवल एक चम्मच ही पिया और उसने अपनी चम्मच नीचे रख दी।

उसके बाद उबला हुआ मॉस आया पर उस लड़की के पिता ने उसमें से बस ज़रा सा ही चखा। बाद में उससे वह खाया ही नहीं गया। उसके बाद मछली परसी गयी तो अबकी बार उस लड़की के पिता ने उसे छुआ तक नहीं।

लोगों ने जब देखा कि लड़की का पिता तो कुछ खा ही नहीं रहा है तो उससे पूछा कि क्या उसको खाना अच्छा नहीं लगा। इस पर उसने कहा नहीं ऐसा नहीं है बस उसको कुछ भूख ही नहीं थी।

उसके बाद भुना हुआ मॉस परसा गया तो उसको वह इतना अच्छा लगा कि उसने वह अपने हाथ से तीन बार लिया।

तब उसकी बेटी ने उससे पूछा कि उसने दूसरी चीज़ें क्यों नहीं छुईं और यह भुना हुआ मॉस ही क्यों इतना पसन्द किया।

वह बोला — "मुझे पता नहीं पर यह भुना हुआ मॉस तो सचमुच में बहुत स्वादिष्ट था और बाकी चीज़ें सब बहुत ही बेस्वाद थीं।"

लड़की बोली — "अब देखा आपने पिता जी कि बिना नमक के खाना कितना बेस्वाद होता है। पहले जो चीज़ें आपको परोसी

गयीं थीं उनमें किसी में नमक नहीं था इसी लिये वे सब आपको बेस्वाद लगीं। और इस भुने हुए मॉस में नमक था इसी लिये आपको यह इतना स्वाद लगा कि आप इसको अपने हाथ से तीन बार ले कर खा गये।

इसी लिये जब आप मेले जा रहे थे तो मैंने आपसे नमक मॅगवाया था। पर मेरी उन दोनों नीच बहिनों ने आपसे यह कह दिया कि मैंने वह नमक आपका अचार डालने के लिये मॅगवाया था और आपने उनके कहने पर मुझको घर से बाहर निकाल दिया।

पिता जी ज़रा सोचिये क्या मैं आपका अचार डाल सकती थी और क्या नमक केवल अचार में ही इस्तेमाल होता है?"

यह सुन कर पिता ने अपनी छोटी बेटी को पहचान लिया। उसको उस जगह देख कर उसको बहुत खुशी हुई।

पिता ने फिर अपनी बेटी को गले से लगा कर उससे माफी मॉगी और उन दोनों बड़ी बेटियों को उनके इस नीच काम की कड़ी सजा दी।

2 फ़ैनिस्ट बाज़[3]

मैं तुम्हारे लिये क्या लाऊँ की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के रूस देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि रूस में एक बहुत ही अमीर किसान अपनी तीन बेटियों के साथ रहता था। कुछ दिन बाद उसकी पत्नी मर गयी तो उसकी सबसे छोटी बेटी मारूष्का[4] बोली — "पिता जी आप चिन्ता मत कीजिये घर मैं सँभाल लूँगी।"

और वह एक अच्छी गृहस्थी सँभालने वाली साबित हुई। पर उसकी दोनों बड़ी बहिनें बहुत ही आलसी और कामचोर थीं। उनको कोई भी चीज़ बहुत देर तक खुश नहीं रख सकती थी – न तो कोई पोशाक, न कोई फ्राक, न ही कोई काफ्तान।

एक दिन वह किसान बाजार जाने के लिये तैयार हुआ तो उसने अपनी बेटियों से पूछा कि वह उनके लिये वहाँ से क्या ले कर आये।

उसकी बड़ी बेटियाँ तुरन्त बोलीं — 'पिता जी आप हम दोनों के लिये खूब बढ़िया सिल्क का शाल ले कर आना जिस पर लाल और सुनहरे रंग में फूल बने हों।"

[3] Fenist the Falcon – a folktale from Russia, Asia. Adapted from the Book : "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

[4] Marushka – the name of the youngest daughter

मारूष्का चुप रही तो पिता ने उससे पूछा — "और बेटी तुम्हारे लिये?"

मारूष्का बोली — "पिता जी, मेरे लिये तो बस फ़ैनिस्ट बाज़[5] का एक पंख लेते आइयेगा।"

यह सुन कर किसान बाजार चला गया और जब वह वहाँ से लौट कर आया तो वह अपनी दोनों बड़ी बेटियों के लिये तो दो शाल ले लाया पर फ़ैनिस्ट बाज़ का पंख उसको सारे बाजार में ढूँढने पर भी कहीं नहीं मिला।

कुछ महीने बाद वह फिर बाजार गया तो उसने फिर अपनी बेटियों से पूछा कि वह उनके लिये बाजार से क्या लाये।

उसकी दोनों बड़ी बेटियों ने कहा कि वह उनके लिये चाँदी के जूते ले कर आये पर मारूष्का ने धीरे से कहा — "पिता जी, मेरे लिये तो वही फ़ैनिस्ट बाज़ का एक पंख लेते आइयेगा।"

उस दिन भी वह किसान सारे दिन बाजार में फ़ैनिस्ट बाज़ का पंख ढूँढता रहा। वह अपनी बड़ी बेटियों के लिये चाँदी के जूते तो खरीद लाया पर फ़ैनिस्ट बाज़ का पंख उसे उस दिन भी कहीं नहीं मिला।

[5] Translated for the word "Falcon". See its picture above

और एक बार फिर वह मारूष्का की मँगायी हुई चीज़ नहीं ला सका। एक बार फिर उसकी बेटी ने उसको तसल्ली दी — "पिता जी आप बहुत चिन्ता न करें आपको वह फिर मिल जायेगा।"

कुछ महीने बाद वह किसान एक बार फिर बाजार जाने लगा तो उसने अपनी बेटियों से एक बार फिर पूछा कि वह उनके लिये क्या ले कर आये तो उसकी दोनों बड़ी बेटियों ने उससे कहा कि वह उनके लिये नारंगी रंग के गाउन ले कर आये।

पर जब मारूष्का से पूछा गया तो उसने वही कहा — "पिता जी, मेरे लिये तो वही फ़ैनिस्ट बाज़ का एक पंख लेते आइयेगा।"

पिता बाजार चला गया। उसने अपनी बड़ी बेटियों के लिये नारंगी गाउन तो खरीद लिये पर फैनिस्ट बाज़ का पंख उसको उस दिन भी हर दूकान पर पूछने पर भी कहीं नहीं मिला।

वह बेचारा बड़ा नाउम्मीद हो कर घर लौट रहा था कि रास्ते में उसको एक बहुत ही बूढ़ा मिला। वह बूढ़ा किसान से बोला — "गुड डे भाई। तुम किधर जा रहे हो?"

किसान ने जवाब दिया — "तुमको भी गुड डे भाई। मैं बड़ा दुखी हो कर घर वापस जा रहा हूँ। मेरी सबसे छोटी बेटी ने मुझसे फ़ैनिस्ट बाज़ का एक पंख लाने के लिये कहा था पर मुझे लाख ढूँढने पर भी वह कहीं नहीं मिला।"

वह बूढ़ा आदमी मुस्कुराया। उसने अपनी जेब से बिर्च के पेड़ की छाल का एक बक्सा निकाला और उस किसान से बोला — "जो

तुम्हें चाहिये वह मेरे पास है। मुझे मालूम है कि तुम्हारी बेटी इस पंख के लायक है सो यह पंख उसी का है।"

कह कर उस बूढ़े आदमी ने वह पंख बक्से के साथ उस किसान को दे दिया। वह किसान बहुत खुश हो गया।

हालॉकि किसान को वह पंख किसी दूसरे मामूली पंख जैसा ही लगा पर उसने उस पंख को ले कर उस बूढ़े आदमी को धन्यवाद दिया और अपने घर चला गया।

घर पहुँच कर उसने अपनी तीनों बेटियों की चीज़ें उनको दे दीं। उसकी दोनों बड़ी बेटियों ने अपने अपने गाउन पहन कर देखे और अपनी सबसे छोटी बहिन की हॅसी उड़ायी — "इस पंख को तो तुम अपने बालों में लगा लेना और फिर देखना तुम कितनी सुन्दर लगती हो।"

मारूष्का बस ज़रा सा मुस्कुरा दी बोली कुछ नहीं।

उस रात को जब घर में सब लोग सो गये तो मारूष्का ने बक्से में से अपना वह पंख निकाला और नीचे फर्श की तरफ उड़ा दिया। फिर वह फुसफुसायी — "मेरे पास आओ ओ फैनिस्ट, मेरे चमकीली ऑखों वाले बाज़।"

और वह पंख तुरन्त ही एक चमकीली ऑखों वाले नौजवान में बदल गया। वह नौजवान इतना सुन्दर था जितना कि सुबह का आसमान होता है।

दोनों आपस में तब तक बात करते रहे जब तक सुबह पौ नहीं फट गयी। पर पौ फटते ही वह नौजवान फर्श से टकराया और फिर से चील बन गया। मारूष्का ने अपनी खिड़की खोल दी और वह बाज़ उसमें से हो कर आसमान में उड़ गया।

इस तरह उसने उस नौजवान को तीन रात बुलाया।

लेकिन चौथी रात को उसकी दोनों बड़ी बहिनों ने किसी को अपनी बहिन के कमरे में बातें करते सुन लिया और सुबह को एक बाज़ को उसकी खिड़की से बाहर उड़ते देख लिया।

उस दिन दोनों खुराफाती बहिनों ने अपनी बहिन के कमरे की खिड़की पर एक बहुत ही तेज़ चाकू लगा दिया। जब रात हुई तो जब वह बाज़ वहाँ आया तो उस तेज़ चाकू से टकरा गया। उसके दोनों पंख उसकी धार से कट गये थे।

मारूष्का तो सो रही थी। वह सोती रही उसको कुछ पता ही नहीं चला।

बाज़ एक गहरी साँस ले कर बोला — "अच्छा विदा प्रिये। अगर तुम मुझे सचमुच प्यार करती हो तो तुम मुझे फिर पा लोगी। पर मुझे पाना इतना आसान भी नहीं होगा।

तुमको धरती के दूसरे छोर तक जाना पड़ेगा। तुमको तीन लोहे के जूते और तीन लोहे के डंडे तोड़ने होंगे और तीन पत्थर की डबल रोटी खानी होंगी।"

रात के अँधेरे में किसी तरह से मारूष्का ने उसके ये शब्द सुन लिये। वह तुरन्त बिस्तर से उठी और अपनी खिड़की की तरफ भागी पर उसको देर हो चुकी थी। वह बाज़ तो जा चुका था। उसकी खिड़की पर तो बस उसके कुछ खून की बूँदें पड़ी थीं।

मारूष्का बहुत देर तक रोती रही। वह इतना रोयी कि उसके आँसुओं में वे खून की बूँदें बह गयीं।

अगली सुबह वह अपने पिता के पास गयी और बोली — "पिता जी मुझे आशीर्वाद दीजिये कि मैं अपने प्यार को ढूँढ सकूँ। मैं अपना प्यार ढूँढने जा रही हूँ।"

किसान बेचारा यह सुन कर बहुत दुखी हुआ कि उसकी बेटी इतनी मुश्किल यात्रा पर जा रही है पता नहीं वह फिर उसको कब देख पायेगा। पर उसको मालूम था कि उसको उसे जाने देना ही चाहिये।

सो उसके आशीर्वाद से मारूष्का ने तीन लोहे के जूते बनवाये, तीन लोहे के डंडे बनवाये और तीन पत्थर की डबल रोटियाँ बनवायीं। उन सबको ले कर वह धरती के उस छोर की तरफ अपनी लम्बी यात्रा पर निकल पड़ी।

वह खुले हुए मैदानों में चली, वह अँधेरे जंगलों में से हो कर गुजरी, वह ऊँची ऊँची पहाड़ियों पर चढ़ी।

चिड़ियों ने उसको अपने गीतों से खुश रखा, नदियों ने उसके पैर धोये और अँधेरे जंगलों ने उसका स्वागत किया। किसी जंगली

जानवर ने उसको कोई नुकसान नहीं पहुँचाया क्योंकि उन सबको मालूम था कि वह एक वफादार लड़की थी।

वह तब तक चलती रही जब तक उसका एक लोहे का जूता टूटा, एक लोहे का डंडा टूटा और उसने एक पत्थर की डबल रोटी खा ली।

उसी समय वह जंगल में एक खुली जगह में निकल आयी। वहाँ उसको एक छोटी सी झोंपड़ी दिखायी दी। वह झोंपड़ी मुर्गी के पैरों पर खड़ी थी। वह गोल गोल घूम रही थी और उसमें कोई खिड़की नहीं थी।

मारूष्का बोली — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। तुम अपने पीछे का हिस्सा पेड़ों की तरफ कर लो और अपना मुँह मेरी तरफ कर लो।"

यह सुन कर मुर्गी के पैरों पर खड़ी हुई वह झोंपड़ी घूमती घूमती रुक गयी और मारूष्का उसके खुले दरवाजे के अन्दर बेधड़क चली गयी। उस झोंपड़ी में एक पत्थर की अँगीठी पर बाबा यागा[6] लेटी हुई थी। वह एक पतली सी स्त्री थी जिसकी लम्बी टेढ़ी नाक थी और एक दाँत था जो उसकी ठोड़ी के नीचे तक लटका हुआ था।

[6] Baba Yaga – a very famous Russian folktale character, a witch, normally wicked, but sometime she helps too. Read her other stories in the book "Roos Ki Baba Yaga" written by Sushma Gupta in Hindi.

मारूष्का उससे डरी नहीं। उसने जादूगरनी को अपने बारे में बताया कि वह क्या करने निकली थी और उससे अपनी सहायता करने की प्रार्थना की।

बाबा यागा बोली — "मेरी प्यारी बच्ची, तुमको तो अभी बहुत दूर जाना है क्योंकि फ़ैनिस्ट तो बहुत दूर रहता है।

उस देश की रानी एक बहुत ही बुरी जादूगरनी है जिसने तुम्हारे फैनिस्ट को एक जादू का रस पिला दिया है। उस रस के जादू के असर से उसने उसको अपने आपसे शादी करने के लिये भी राजी कर लिया है। पर मैं उसको ढूँढने में तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।

लो यह लो चाँदी की तश्तरी और सोने का अंडा और इनको ले कर उसके महल चली जाओ। हो सकता है कि रानी इनको खरीदना चाहे पर तुम इनको उसको तब तक मत बेचना जब तक कि वह तुम को फ़ैनिस्ट बाज़ से न मिलने दे।"

उसके बाद बाबा यागा ने उसको सुनहरे धागे का एक गोला दिया और कहा कि वह उस धागे को जंगल में लुढ़काती चली जाये तो वह उसको उसकी दूसरी बहिन के पास पहुँचा देगा। वह वहाँ से उसको आगे बतायेगी कि उसको क्या करना है।"

बाबा यागा को धन्यवाद दे कर मारूष्का अपने रास्ते पर चल दी। पेड़ों ने उसका रास्ता रोक लिया, जंगल बहुत अँधेरा हो गया और उस अँधेरे में उल्लू भी बोलने लगे।

फिर भी वह चलती गयी चलती गयी जब तक कि उसका दूसरा लोहे का जूता नहीं टूट गया, दूसरा लोहे का डंडा नहीं टूट गया और उसकी पत्थर की दूसरी डबल रोटी भी खतम नहीं हो गयी।

उसी समय वह जंगल में एक खुली जगह पर आ गयी। वहाँ पर भी उसको एक छोटी सी झोंपड़ी दिखायी दी। वह झोंपड़ी भी मुर्गी के पैरों पर खड़ी थी और वह भी गोल गोल घूम रही थी।

वहाँ जा कर मारूष्का फिर बोली — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। तुम अपने पीछे का हिस्सा पेड़ों की तरफ कर लो और अपना मुँह मेरी तरफ कर लो।"

यह सुन कर मुर्गी के पैरों पर खड़ी वह घूमती हुई झोंपड़ी भी रुक गयी और उसमें खिड़कियाँ और एक दरवाजा खुल गया। मारूष्का उसके खुले दरवाजे के अन्दर भी बेधड़क चली गयी।

उस झोंपड़ी में एक पत्थर की अँगीठी पर एक दूसरी बाबा यागा लेटी हुई थी। यह बाबा यागा अपनी बहिन से भी ज़्यादा बदसूरत और पतली दुबली थी।

मारूष्का ने उसको अपनी कहानी सुनायी और उसको उसकी बहिन के दिये हुए चाँदी की तश्तरी और सोने का अंडा दिखाये। वह बोली — "बहुत अच्छे मेरी प्यारी बिटिया। मैं तुम्हारी सहायता

जरूर करूँगी। यह सोने की सुई और चाँदी का फ्रेम[7] ले जाओ हो सकता है कि वह रानी इनको खरीदना चाहे। पर तुम इनको उसको तब तक मत बेचना जब तक वह तुमको तुम्हारे फैनिस्ट बाज़ से न मिलने दे।

मगर इससे पहले तुमको मेरी बड़ी बहिन के पास जाना पड़ेगा। इसके आगे वह तुमको बतायेगी कि तुमको क्या करना है।"

मारूष्का ने दूसरी बाबा यागा को धन्यवाद दिया और आगे बढ़ गयी। उसने वह सोने के धागे वाला गोला फिर से आगे लुढ़काया और उसके पीछे पीछे पेड़ों के बीच में से हो कर चली।

इस बार पेड़ों की शाखाओं ने उसके कपड़ों की आस्तीनें फाड़ दीं, उसके चेहरे पर खरोंचें डाल दीं, चिड़ियों ने भी कोई गीत नहीं गाया और जंगली जानवर भी उसकी तरफ रास्ते भर देखते रहे। पर वह पीछे देखे बिना ही आगे बढ़ती रही।

धीरे धीरे उसके तीसरे लोहे के जूते भी फट गये, तीसरा लोहे का डंडा भी टूट गया और तीसरी पत्थर की डबल रोटी भी खत्म हो गयी।

[7] Frame – a frame of wood or iron or any metal used to kepp the cloth in place to embroider it – see its picture above. In this picture it is round.

उसी समय वह तीसरी खुली जगह में आ निकली। वहाँ भी उसको पहले जैसी एक झोंपड़ी दिखायी दी। वह झोंपड़ी भी मुर्गी के पैरों पर खड़ी थी और घूम रही थी।

वहाँ जा कर मारूष्का फिर बोली — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। तुम अपने पीछे का हिस्सा पेड़ों की तरफ कर लो और अपना मुँह मेरी तरफ कर लो।"

मुर्गी के पैरों पर खड़ी हुई घूमती हुई वह झोंपड़ी भी यह सुन कर तुरन्त रुक गयी और मारूष्का उसके खुले दरवाजे के अन्दर बेधड़क चली गयी।

उस झोंपड़ी में एक पत्थर की अँगीठी पर तीसरी बाबा यागा लेटी हुई थी। यह बाबा यागा अपनी दोनों बहिनों से भी ज़्यादा बदसूरत और पतली दुबली थी।

मारूष्का ने उसको भी अपनी कहानी सुनायी। वह बाबा यागा बोली — "फ़ैनिस्ट चील को पाना आसान नहीं है, प्यारी बेटी। तुम को धरती के आखीर तक जाना पड़ेगा। पर तुम चिन्ता न करो मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।

तुम यह चाँदी की अटेरन[8] लो और यह सोने की तकली[9] लो और इनको ले कर महल चली जाओ।

[8] Translated for the word "Distaff". The spun thread is kept on this. See its picture above.
[9] Translated for the word "Spindle". The cotton is spun from this. See its picture above.

हो सकता है कि रानी तुमसे इनको खरीदना चाहे पर तुम इनको उसको तब तक मत बेचना जब तक कि वह तुमको तुम्हारे फ़ैनिस्ट बाज़ से न मिलने दे।"

मारूष्का ने उसको भी धन्यवाद दिया और अपना सोने के धागे वाला गोला जमीन पर लुढ़का दिया। वह धागा उसको एक बड़े डरावने जंगल में से ले कर चला।

वह अभी बहुत दूर नहीं गयी थी कि उसने किसी के चिंघाड़ने की और पंखों के फड़फड़ाने की आवाज सुनायी दी। बहुत सारे उल्लू वहॉ से उड़े और उसके चारों तरफ घूमने लगे। बहुत सारे चूहे उसके पैरों में इधर उधर घूमने लगे। खरगोश रास्ते पर कूदने लगे। वह डर कर रुक गयी।

तभी एक बड़ा सा भूरा भेड़िया वहॉ आ गया और मारूष्का से बोला — "डरो मत मारूष्का। आओ मेरी पीठ पर बैठ जाओ। मैं तुमको महल तक ले चलता हूँ।"

मारूष्का उसकी पीठ पर बैठ गयी और भेड़िया उसको सोने के धागे के गोले के पीछे पीछे हवा की तेज़ी से उड़ा कर ले चला।

घास के हरे हरे मैदान पलक झपकते निकल गये। पहाड़ जो आसमान तक ऊँचे ऊँचे थे वे सब भी आसानी से पार हो गये।

आखिर वे एक क्रिस्टल के महल के पास आ पहुँचे। उसका सोने का गुम्बद सूरज की रोशनी में चमक रहा था। रानी उस महल की सफेद मीनार से नीचे झाँक रही थी।

मारूष्का ने भेड़िये को धन्यवाद दिया, अपनी गठरी उठायी और मीनार के नीचे की तरफ चली। वहाँ पहुँच कर वह बहुत ही नम्रता से बोली — "योर मैजेस्टी, क्या आपको किसी ऐसी नौकरानी की जरूरत है जो सूत काते, बुनाई और कढ़ाई करे?"

रानी बोली — "ओ लड़की, अगर तुम यह तीनों काम कर सकती हो तो अन्दर आ जाओ और काम करना शुरू कर दो।"

इस तरह मारूष्का उस महल में नौकरानी का काम करने लगी।

एक दिन मारूष्का ने सारा दिन बिना रुके काम किया और जब शाम आयी तो उसने अपना सोने का अंडा और चाँदी की तश्तरी ली और उसे रानी को दिखाया।

तुरन्त ही वह अंडा उस तश्तरी में घूमने लगा और घंटिया बजने की आवाज सुनायी देखने लगी। अचानक उस तश्तरी में रूस के सारे बड़े बड़े शहर दिखायी देखने लगे।

यह देख कर तो रानी बड़े आश्चर्य में पड़ गयी। वह बोली — "चाँदी की यह तश्तरी और सोने का यह अंडा तुम मुझे बेच दो।"

मारूष्का बोली — "योर मैजेस्टी, ये बेचने के लिये तो नहीं हैं पर आप इनको ऐसे ही रख सकती हैं अगर आप मुझे चमकीली आँखों वाले फ़ैनिस्ट बाज़ से मिलने दें।"

रानी राजी हो गयी बोली — "ठीक है। आज रात को जब वह सो जायेगा तब तुम उसके कमरे में जा सकती हो।"

जब रात हो गयी तो मारूष्का फ़ैनिस्ट बाज़ के कमरे की तरफ चली। वहॉ जा कर उसने देखा कि फ़ैनिस्ट बाज़ तो गहरी नींद सो रहा है।

उसने उसको जगाने की बहुत कोशिश की पर वह उसको जगा नहीं सकी क्योंकि रानी ने उसकी कमीज में जादू की एक पिन लगा दी थी।

उसने उसको जगाने की बहुत कोशिश की उसको पुकारा, उसकी गहरी काली भौंह को चूमा, उसके पीले हाथों को सहलाया पर वह तो सोता ही रहा किसी तरह भी नहीं जागा।

सुबह जब खिड़की से सूरज की किरनें अन्दर आयीं तब तक भी जब वह अपने प्रिय फ़ैनिस्ट को नहीं जगा सकी तो उसको वहॉ से वापस आना पड़ा।

अगले दिन फिर उसने खूब मन लगा कर काम किया और शाम को उसने अपना चॉदी का फ्रेम और सोने की सुई निकाली।

सुई ने अपना काम अपने आप करना शुरू कर दिया तो मारूष्का बुड़बुड़ायी — "तू एक ऐसा कपड़ा काढ़ जिससे वह रोज सुबह अपनी ऑखों की भौंहें साफ कर सके।"

इस बार मारूष्का ने रानी को सुई और फ्रेम दिखाया तो रानी उसको भी तुरन्त ही खरीदने के लिये कहने लगी। मारूष्का ने फिर

वही जवाब दिया — "योर मैजेस्टी, ये बेचने के लिये तो नहीं हैं पर आप इनको ऐसे ही रख सकती हैं अगर आप मुझे फ़ैनिस्ट को एक बार फिर से देखने दें।"

रानी फिर राजी हो गयी — "ठीक है, तुम उसको आज की रात फिर देख सकती हो।"

जब रात हुई तो मारूष्का एक बार फिर से फ़ैनिस्ट के सोने के कमरे में गयी पर वह तभी भी बहुत ही गहरी नींद सो रहा था। बहुत उठाने पर भी वह नहीं उठा।

वह बोली — "ओह मेरे प्यारे फ़ैनिस्ट, मेरे बहादुर चमकीली ऑखों वाले बाज़ जागो और मुझसे बात करो।"

पर वह तो गहरी नीद ही सोता रहा क्योंकि चालाक रानी ने उसके बालों में कंघी करते समय एक जादू की पिन लगा दी थी जिसकी वजह से मारूष्का उसको लाख कोशिश करने पर भी नहीं जगा सकी।

सुबह होने पर उसको अपनी कोशिश छोड़ देनी पड़ी और उसको वहॉ से आना पड़ा।

उस दिन भी उसने सारा दिन खूब लग कर काम किया और जब शाम हुई तो उसने अपनी चॉदी की अटेरन और सोने की तकली निकाली और रानी को दिखायी।

पहले की तरह से रानी ने इस बार भी उनको उससे खरीदना चाहा पर मारूष्का ने फिर से वही जवाब दिया — "योर मैजेस्टी, ये

चीजें बेचने के लिये नहीं हैं पर आप इनको ऐसे ही रख सकती हैं अगर आप मुझे फ़ैनिस्ट को एक बार आखिरी बार फिर से देखने दें।"

रानी यह सोचते हुए फिर राजी हो गयी कि मारूष्का उसको जगाने में कामयाब नहीं हो पायेगी क्योंकि आज उसको वह जादू का रस पिला कर सुला देगी। वह बोली— "ठीक है, तुम उसको आज की रात एक बार और देख सकती हो।"

रात हुई और मारूष्का एक बार फिर आखिरी बार फ़ैनिस्ट के सोने वाले कमरे में घुसी। फ़ैनिस्ट और दिनों की तरह से आज भी गहरी नींद सो रहा था।

मारूष्का फिर बोली — "ओह मेरे प्यारे फ़ैनिस्ट, मेरे बहादुर चमकीली ऑखों वाले चील जागो और मुझसे बात करो।"

पर वह नहीं जागा तो वह नाउम्मीद हो कर रो पड़ी। फ़ैनिस्ट सारी रात सोता रहा और हालॉकि मारूष्का ने उसको जगाने की फिर से बहुत कोशिश की पर वह नहीं उठा।

अब सुबह होने वाली थी सो मारूष्का ने अखिरी विदा कहने और बाहर जाने से पहले उसके काले बालों में अपना हाथ फेरा कि उसका एक गरम ऑसू उसके गालों से लुढ़क कर फ़ैनिस्ट के कन्धे पर गिर पड़ा। इससे फ़ैनिस्ट की मुलायम खाल जल गयी।

इस जलन को महसूस करके वह हिला और उसने अपनी ऑखें खोल दीं। मारूष्का को वहॉ देख कर वह तुरन्त उठ बैठा और बोला — "अरे, क्या यह तुम हो? मेरा खोया हुआ प्यार।"

कहते कहते वह रो पड़ा। उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे। "इसका मतलब यह है कि तुमने तीन लोहे के जूते और तीन लोहे के डंडे तोड़ दिये और तीन पत्थर की डबल रोटियॉ भी खा लीं।

तुम धरती के इस कोने तक यात्रा कर आयीं। अब हमको कोई अलग नहीं कर सकता मारूष्का, कोई नहीं।"

अब फ़ैनिस्ट का जादू टूट चुका था सो वह मारूष्का को शाही दरबार में ले गया। वहॉ दरबार ने फैसला दिया कि रानी को देश निकाला दे दिया जाये और मारूष्का को वहॉ की रानी बना दिया जाये क्योंकि वह बहुत बहादुर थी, अक्लमन्द थी और मजबूत थी।

और फिर ऐसा ही हुआ।

3 सुन्दरी और जानवर[10]

मैं तुम्हारे लिये क्या लाऊँ जैसी कहानियों की इस पुस्तक की यह कहानी यूरोप महाद्वीप के फ्रांस देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह फ्रांस की एक बहुत ही मशहूर और लोकप्रिय लोक कथा है।

इस कहानी में एक लड़की अपने पिता से केवल एक गुलाब का फूल लाने के लिये कहती है पर वह गुलाब क्या क्या गुल खिलाता है यह तुम लोग यहाँ पढ़ो।

एक बार की बात है कि फ्रांस में एक सौदागर रहता था। उसके तीन बेटियाँ थीं। वे सब एक बहुत ही अच्छे शहर में और एक बहुत ही अच्छे मकान में रहते थे।

वे सोने और चाँदी की थालियों में खाना खाते थे और उनकी पोशाकें दुनियाँ के सबसे बढ़िया कपड़े की बनी होती थीं जिनमें जवाहरात लगे रहते थे।

दो बड़ी लड़कियों के नाम थे मैरीगोल्ड और ड्रैसैलिन्डा[11]। ऐसा कोई दिन खाली नहीं जाता था जिस दिन वे दोनों लड़कियाँ कहीं किसी दावत पर न जाती हों। पर तीसरी लड़की जिसका नाम सुन्दरी था घर पर ही अपने पिता के साथ रहना पसन्द करती थी।

---

[10] Beauty and the Beast – a folktale of France, Europe. By Jeanne-Marie LePrince de Beaumont and published in 1756. Adapted from the Web Site : http://www.childstoryhour.com/story23.htm

[11] Marigold and Dresselinda – names of the two elder dauhters of the merchant

अब एक दिन ऐसा हुआ कि उन लोगों के बुरे दिन आ गये। सौदागर के जहाज़ जिनमें बहुत सारा कीमती सामान भरा हुआ था समुद्र में खेते हुए टूट गये और वह शहर का सबसे ज़्यादा अमीर आदमी होने की बजाय शहर का एक सबसे गरीब आदमी बन कर रह गया।

पर इस सब नुकसान के बाद अभी भी उनके पास गॉव में एक मकान बच गया था। सो शहर में जब उनका सब कुछ बिक गया तो वह सौदागर अपनी तीनों बेटियों को साथ ले कर वहॉ से गॉव चला आया।

मैरीगोल्ड और ड्रैसैलिन्डा दोनों इस बात से बहुत दुखी थीं कि उनका सब कुछ खो गया था। वे पहले बहुत अमीर थीं और लोग उनके साथ घूमने की इच्छा करते थे पर अब जबकि अब वे एक छोटे से गॉव के छोटे से मकान में रहती थीं वे अकेली पड़ गयी थीं।

पर सौदागर की तीसरी सबसे छोटी बेटी सुन्दरी हमेशा अपने दुखी पिता को खुश रखने के बारे में ही सोचती रहती थी। जबकि उसकी दोनों बड़ी बहिनें लकड़ी की कुरसियों पर बैठी रहतीं और रोती रहतीं।

क्योंकि अब सौदागर कोई नौकर नहीं रख सकता था इसलिये अब सुन्दरी ही सारे घर का काम करती थी। वही घर में आग जलाती और सारे घर के लिये खाना बनाती। फिर बरतन साफ

करती और घर भर को खुश रखने की अपनी पूरी कोशिश करती। ज़िन्दगी इसी तरह चलने लगी।

दोनों बड़ी बेटियाँ घर में कोई काम नहीं करतीं सिवाय इसके कि वे अपनी हालत पर रोती रहतीं या फिर अपना मुँह सुजाये पड़ी रहतीं।

दोनों बहिनें अपनी सबसे छोटी बहिन को बहुत तंग करतीं क्योंकि उसके बारे में उनकी शिकायतें ही खत्म नहीं होती थीं। वे घर में काम भी नहीं करती थीं और साथ में उसके हर काम में गलतियाँ भी निकालतीं रहती थीं। पर सुन्दरी अपने पिता की वजह से उनकी हर बात शान्ति से सह लेती।

इस तरह से एक साल बीत गया और एक दिन उस सौदागर के लिये एक चिट्ठी आयी। चिट्ठी पढ़ कर सौदागर अपनी बेटियों को ढूँढ रहा था ताकि वह उस चिट्ठी में लिखी हुई अच्छी खबर उनको सुना सके।

जैसे ही वे उसको मिल गयीं वह बोला — "बेटियो, मुझको लगता है कि अब हमारे अच्छे दिन वापस आ गये। हमारा एक जहाज़ जिसको हम यह सोच चुके थे कि वह खो गया है वह मिल गया है और वापस आ गया है।

और अगर ऐसा है तो अब हमको गरीबी में नहीं रहना पड़ेगा। अब हम लोग पहले की तरह से तो अमीर नहीं होंगे पर कम से कम आराम से रह पायेंगे।

सुन्दरी, जा बेटी मेरा यात्रा वाला शाल[12] ले आ। मैं अभी अपने जहाज़ को लेने के लिये जाता हूँ। अब तुम लोग मुझे यह बताओ कि मैं वहाँ से तुम लोगों के लिये क्या ले कर आऊँ?"

मैरीगोल्ड बिना किसी हिचक के तुरन्त ही बोली — "मेरे लिये सौ पौंड लाना।"

ड्रैसैलिन्डा बोली — "पिता जी, मेरे लिये एक सिल्क की पोशाक लाना।"

सुन्दरी ने अपने पिता को उसका यात्रा वाला शाल ओढ़ाया तो पिता ने उससे पूछा — "और बेटी मैं तुम्हारे लिये क्या ले कर आऊँ?"

सुन्दरी बोली — "मेरे लिये पिता जी एक गुलाब का फूल लाइयेगा।"

उसके पिता ने उसे प्यार से चूमा और गुड बाई करके अपने काम पर चला गया। पिता के जाते ही मैरीगोल्ड ने सुन्दरी से कहा — "ओ बेवकूफ लड़की, क्या तू पिता जी को यह दिखाना चाहती है कि तू हमसे ज़्यादा पिता का ख्याल रखती है? क्या तुझको वाकई गुलाब चाहिये?"

[12] Translated for the word "Cloak" – see its pictute above. It may be long as it is shown here, or short – up to the waist

सुन्दरी बोली — "हॉ बहिन मुझे वाकई गुलाब चाहिये। पर उसको मॉगने की यह वजह नहीं थी जो तुम सोच रही हो। मुझे लगा कि पिता जी को अपने जहाज की सुरक्षा देखने में काफी काम रहेगा सो बिना बाजार जाये ही वह मेरे लिये यह ला सकते हैं मैंने इसी लिये उनसे वह मॅगवाया।"

पर उसकी बहिनें उसकी इस बात पर उससे बहुत नाराज थीं। वे वहॉ से अपने कमरे में चलीं गयीं और जा कर अपनी उन चीज़ों के बारे में बात करने लगीं जो उनके पिता उनके लिये लाने वाले थे।

इस बीच वह सौदागर बड़ी उम्मीद से अपने प्लान बनाता हुआ शहर गया कि वह अपने पैसे का क्या करेगा जो उसे उस जहाज़ से मिलेगा। पर जब वह बन्दरगाह पर पहुँचा तो उसको पता चला कि वहॉ तो कोई जहाज़ नहीं आया।

उसने सोचा लगता है किसी ने उसके साथ चाल खेली है। सो वह फिर से अपनी उसी हालत में रह गया था। वह बेचारा सारा दिन केवल यह पता करने के लिये इधर उधर घूमता रहा कि जो चिट्ठी उसको मिली थी उस चिट्ठी में कोई सच्चाई थी या नहीं।

शाम को बड़े दुखी मन से वह अपने घर की तरफ चल पड़ा। वह बहत थका हुआ था और परेशान था। जबसे उसने घर छोड़ा था उसने खाना भी नही खाया था सो वह भूखा भी था।

घर आते आते उसको काफी अँधेरा हो गया और वह एक जंगल के पास आ निकला जिसको उसे घर पहुँचने से पहले पार करना होता था।

तभी उसको जंगल में एक रोशनी चमकती हुई दिखायी दी तो उसने उस रात अपने घर जाने का विचार छोड़ दिया और निश्चय किया कि वह वहीं जंगल में उसी रोशनी की तरफ जायेगा और वहीं खाना और रात को रुकने की जगह माँगेगा।

वह सोच रहा था कि शायद वहाँ किसी लकड़हारे की कोई झोंपड़ी होगी पर वह जैसे जैसे उस रोशनी के पास पहुँचा तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह रोशनी तो एक बड़े शानदार महल की एक खिड़की से आ रही थी।

उसने उस महल का दरवाजा खटखटाया पर किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। उस समय उसको बहुत तेज़ भूख लग रही थी और बाहर बहुत ठंडा था सो वह हिम्मत करके उस महल के अन्दर घुस गया और संगमरमर की सीढ़ियाँ चढ़ कर एक बड़े से कमरे में पहुँच गया।

रास्ते में भी उसको कोई नहीं मिला। उस बड़े कमरे में आग जल रही थी सो वह उसकी गरमी लेने के लिये उस आग के पास बैठ गया। जब वह थोड़ा गरम हो गया तो घर के मालिक को ढूँढने निकला।

पर उसको बहुत दूर नहीं जाना पड़ा। पहला दरवाजा खोलते ही उसको एक और कमरा मिला जिसमें मेज पर एक आदमी के लिये खाना लगा था। उस खाने को देखते ही उसकी भूख और बढ़ गयी।

क्योंकि घर का मालिक अभी भी उसको नहीं मिला था सो जितनी हिम्मत से वह घर में घुसा था उतनी ही हिम्मत से वह खाना खाने भी बैठ गया।

खाना खाने के बाद उसने फिर से घर के मालिक से मिलने का विचार किया तो उसने महल का दूसरा दरवाजा खोला। वहाँ उस कमरे में एक बहुत सुन्दर बिस्तर लगा हुआ था।

पेट भरने के बाद और थके होने की वजह से उसको बहुत ज़ोर की नींद आ रही थी। पलंग देख कर उसने सोचा "यह तो किसी परी का काम दिखायी देता है सो मुझे अब और आगे इस घर के मालिक को ढूँढने की जरूरत नहीं है।" सो वह उस पलंग पर लेट गया और तुरन्त ही सो गया।

जब वह उठा तो सुबह हो चुकी थी। एक दम से वह अपने आपको इतने मुलायम बिस्तर में पा कर बहुत आश्चर्यचकित था पर फिर उसको सब याद आ गया कि कल रात क्या हुआ था।

उसने सोचा "अब मुझे चलना चाहिये पर अच्छा होता अगर मैं इस घर के मालिक को उसके इस अच्छे खाने और सोने की सुविधा देने के लिये धन्यवाद देता जाता।

पर जब वह बिस्तर से बाहर निकला तो उसको लगा कि इस घर के मालिक को उसको खाने और सोने की जगह देने के अलावा किसी और चीज़ के लिये भी धन्यवाद देना था।

उसके पलंग के पास रखी एक कुरसी पर एक नया सूट रखा था जिस पर उसका नाम लिखा हुआ था और उस सूट की हर जेब में दस दस सोने के सिक्के रखे हुए थे।

जब उसने वह नीला और सुनहरी सूट पहना जिसकी जेब में वे सोने के सिक्के खनखना रहे थे तो वह तो एक दूसरा ही आदमी लगने लगा।

कपड़े पहन कर जब वह नीचे गया तो उसी छोटे कमरे में जिसमें उसने पिछली रात खाना खाया था सुबह का नाश्ता उसका इन्तजार कर रहा था। उसने पेट भर कर नाश्ता किया और फिर सोचा कि उस महल के बागीचे में थोड़ा घूम लिया जाये।

वह संगमरमर की सीढ़ियॉ उतर कर नीचे गया और जब बागीचे में पहुँचा तो उसने देखा कि वह बागीचा तो गुलाब के फूलों से भरा पड़ा है – लाल और सफेद, गुलाबी और पीले। उनको देख कर सौदागर को सुन्दरी की मॉग का ध्यान आ गया।

उसने सोचा — "बेचारी मेरी प्यारी दोनों बड़ी बेटियॉ, वे कितनी नाउम्मीद होंगीं जब वे यह सुनेंगी कि मेरा जहाज़ नहीं आया। पर सुन्दरी को वह जरूर मिल जायेगा जो उसने मॉगा था।"

और उसने हाथ बढ़ा कर अपने सबसे पास वाला गुलाब तोड़ लिया। जैसे ही गुलाब की डंडी उसके हाथ में टूटी वह डर कर पीछे हट गया क्योंकि तभी उसने गुस्से से भरी एक गर्जना सुनी।

दूसरे ही पल एक भयानक जानवर उसके ऊपर कूद पड़ा। वह दुनियॉ के किसी भी आदमी से ज़्यादा लम्बा था और किसी भी जानवर से ज़्यादा बदसूरत था। वह जानवर उस सौदागर को दुनियॉ की किसी भी चीज़ से कहीं ज़्यादा भयानक लग रहा था।

जानवर की आवाज में दहाड़ने के बाद वह उससे आदमी की आवाज में बोला — "ओ नीच, क्या मैंने तुमको खाना नहीं खिलाया? क्या मैंने तुमको रात को सोने के लिये जगह नहीं दी? क्या मैंने तुमको पहनने के लिये कपड़े नहीं दिये?

और तुम मेरे इन ऐहसानों का बदला उन चीज़ों को चुरा कर दे रहे हो जिनकी में इतनी परवाह करता हूँ?"

सौदागर बेचारा रुऑसा हो कर बोला — "दया करो, मुझ पर दया करो।"

वह जानवर बोला — "नहीं, तुमको तो अब मरना ही है।"

बेचारा सौदागर घुटनों के बल बैठ गया और सोचने लगा कि वह क्या कह कर उस बेरहम जानवर का दिल पिघलाये।

आखिर वह बोला — "जनाब, मैंने यह फूल केवल इसलिये चुराया क्योंकि मेरी सबसे छोटी बेटी ने मुझसे एक गुलाब का फूल

लाने के लिये कहा था। मैं तो यह सोच भी नहीं सकता था कि इतना सब देने के बाद आप केवल एक गुलाब के फूल के ऊपर मेरे ऊपर इतना गुस्सा होंगे।"

जानवर ने पूछा — "अच्छा तो तुम अपनी इस बेटी के बारे में बताओ। क्या वह एक अच्छी लड़की है?"

सौदागर बोला — "जनाब वह मेरी सबसे अच्छी और सबसे प्यारी बेटी है।"

और यह कह कर वह यह सोचते हुए रो पड़ा कि अब तो वह मर ही जायेगा। उसकी प्यारी बेटी सुन्दरी इस दुनियॉ में अकेली रह जायेगी। कौन उससे दया का बरताव करेगा।

वह रोते रोते बोला — "ओह, मेरे बाद मेरे बच्चे कैसे रहेंगे?"

वह जानवर फिर बोला — "पर यह तो तुमको मेरा गुलाब चुराने से पहले सोचना चाहिये था। हॉ अगर तुम्हारी कोई एक बेटी तुमको इतना प्यार करती हो जो तुम्हारे बिना रहने की बजाय तकलीफ सहना ज़्यादा पसन्द करे तो तुम्हारी जान बच सकती है।

तुम अपने घर वापस जाओ और अपनी सब बेटियों को जा कर बताओ कि तुम्हारे साथ क्या हुआ। पर तुम मुझसे वायदा करो कि आज से अगले तीन महीनों के अन्दर अन्दर तुम या तुम्हारी एक बेटी यहॉ मेरे महल के दरवाजे पर जरूर होगे।"

उस बेचारे आदमी को इस बात का वायदा करना पड़ा कि ऐसा ही होगा। उसने सोचा कि कम से कम उसकी ज़िन्दगी तीन महीने तो बढ़ी।

जानवर फिर बोला — "मैं तुमको इस तरह खाली हाथ नहीं जाने दूँगा।" कह कर वह अपने महल की तरफ चल दिया और वह आदमी उसके पीछे पीछे चल दिया।

वह जानवर उस आदमी को एक बड़े कमरे में ले गया। वहाँ उस कमरे के फर्श पर चाँदी की एक बहुत बड़ी आलमारी रखी थी। जानवर ने वह आलमारी खोल कर उसको दिखाते हुए कहा — "इसमें से जो चीज़ भी तुमको अच्छी लगे वह और जितना तुमको चाहिये तुम उतना खजाना ले लो।"

सौदागर से जितना लिया जा सका उसमें से उसने उतना खजाना ले लिया। जानवर ने उस आलमारी का दरवाजा बन्द करते हुए कहा — "अब तुम अपने घर जा सकते हो।"

सो वह सौदागर भारी दिल से अपने घर के लिये चला। जैसे ही वह महल के दरवाजे से बाहर निकला तो वह जानवर बोला — "पर तुम सुन्दरी का यह गुलाब तो भूल ही गये।"

और उसी समय उसने अपने बागीचे के सबसे सुन्दर गुलाब के फूलों का एक बहुत बड़ा गुच्छा सौदागर के हाथों में थमा दिया।

वह सौदागर जब घर पहुँचा तो सुन्दरी उससे मिलने के लिये बाहर दौड़ी आयी तो उसने सब कुछ सुन्दरी को पकड़ा दिया और

बोला — "ले मेरी बच्ची और आनन्द कर क्योंकि यह सब तेरे गरीब पिता की ज़िन्दगी के बदले में हैं।"

यह कह कर वह बैठ गया और फिर अपनी सारी कहानी अपनी तीनों बेटियों को सुनायी। उसकी कहानी सुन कर दोनों बड़ी बेटियाँ रो पड़ी। वे सुन्दरी को ही इस सबके लिये जिम्मेदार ठहरा रहीं थी।

वे सुन्दरी से बोलीं — "अगर तुम्हारी ऐसी माँग न होती तो हमारे पिता जी अपने नये कपड़ों में सोने के सिक्के ले कर महल से ऐसे ही चले आते। पर तुम्हारी गुलाब की माँग ने उनको गुलाब तोड़ने पर मजबूर किया और यह सब हुआ। उसी ने उनकी जान खतरे में डाली।"

सुन्दरी बोली — "नहीं नहीं, पिता जी अपनी ज़िन्दगी नहीं देंगे। मैं ही अपनी ज़िन्दगी दूँगी। क्योंकि तीन महीने पूरे होने पर मैं उस जानवर के पास जाऊँगी और फिर अगर वह चाहे तो मुझे मारे या और कुछ करे पर मैं उसको अपने पिता जी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाने दे सकती।"

सौदागर ने उसे बहुत समझाया कि वह उस जानवर के पास न जाये पर सुन्दरी ने तो यह सोच लिया था सो वह तीन महीने खत्म होने पर उस जानवर के महल की तरफ चल दी। उसका पिता उसको रास्ता दिखाने के लिये उसके साथ गया।

पहले की तरह ही उसने जंगल में रोशनी जलती हुई देखी, पहले ही की तरह बेकार ही उसने उस महल का दरवाजा खटखटाया, बड़े कमरे में जा कर अपने आपको थोड़ा गरम किया और उसके बाद दूसरे छोटे कमरे में दो लोगों के लिये खाने की मेज लगी देखी।

सुन्दरी बोली — "पिता जी, आप बिल्कुल चिन्ता मत कीजिये। मुझे नहीं लगता कि वह जानवर मुझे मारना चाहता है। क्योंकि अगर ऐसा होता तो वह मुझे इतना अच्छा खाना न खिलाता।"

पर अगली सुबह जब वह जानवर कमरे में आया तो सुन्दरी उसको देख कर डर के मारे अपने पिता से जा कर चिपक गयी।

जानवर बहुत ही नम्र आवाज में बोला — "तुमको मुझसे डरने की जरूरत नहीं है। पर तुम मुझको इतना बता दो कि क्या तुम अपनी मरजी से यहाँ आयी हो?"

काँपते हुए सुन्दरी बोली — "हाँ।"

जानवर बोला — "तुम बहुत अच्छी लड़की हो।"

फिर वह उसके पिता की तरफ घूम कर उससे बोला — "तुम अगर चाहो तो आज की रात यहाँ सो सकते हो। पर सुबह होते ही तुम अपने घर चले जाना और अपनी बेटी को यहाँ छोड़ जाना।"

अगली सुबह पिता बेचारा अपनी बेटी को छोड़ कर ज़ोर ज़ोर से रोता हुआ अपने घर चला गया। सुन्दरी भी अपने आपको सँभालती हुई उससे न डरने की कोशिश करती रही। वह महल में

इधर उधर घूमती रही। उसने इतना अच्छा महल पहले कभी नहीं देखा था।

उस महल में जो सबसे अच्छे कमरे थे उनके दरवाजों के ऊपर लिखा था "सुन्दरी का कमरा"।

उन कमरों में से किसी में बहुत सारी किताबें रखी थीं तो किसी में संगीत रखा था, किसी में कैनेरी चिड़ियॉ थीं तो किसी में फारस की बिल्लियॉ थीं और वह सब कुछ वहॉ था जो किसी के लिये अच्छा समय गुजारने के लिये हो सकता था।

यह सब देख कर उसके मुँह से निकला — "ओह, काश यहॉ मैं अपने पिता को देख सकती तो मुझे कितना अच्छा लगता।"

जब वह यह बोल रही थी तो वह एक बहुत बड़े शीशे के सामने खड़ी थी। तुरन्त ही उस शीशे में उसने अपने पिता की परछाईं देखी जो घोड़े पर सवार उसी महल की तरफ चला आ रहा था।

उस रात जब सुन्दरी शाम को खाना खाने बैठी तो वह जानवर वहॉ आया और उससे पूछा — "क्या मैं तुम्हारे साथ खाना खा सकता हूँ?"

सुन्दरी बोली — "अगर तुमको अच्छा लगे तो।" सो वह जानवर भी उसके साथ खाना खाने बैठ गया।

जब वह खाना खा चुका तो बोला — "सुन्दरी, मैं तो बहुत बदसूरत हूँ और बहुत बेवकूफ भी। पर मैं तुमको बहुत प्यार करता हूँ। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

सुन्दरी बड़ी नरमी से बोली — "नहीं जानवर।"

जानवर ने एक लम्बी साँस भरी और वहाँ से उठ कर चला गया।

हर रात ऐसा ही होता रहा। जानवर सुन्दरी के साथ खाना खाता। खाना खा कर वह उससे पूछता कि क्या वह उससे शादी करेगी। वह हमेशा उसको नरमी से मना कर देती "नहीं, जानवर" और वह वहाँ से उठ कर चला जाता।

इस सारे समय में कोई छिपे छिपे उसके कामों के लिये खड़ा रहता जैसे वह कोई रानी हो। उसको कोई गवैया या बाजे बजाने वाले तो दिखायी नहीं देते थे पर उसके कानों में संगीत की आवाज सुनायी पड़ती रहती।

पर इन सब चीज़ों में वह जादुई शीशा सबसे अच्छा था क्योंकि उसमें वह सब कुछ देख सकती थी जो वह चाहती थी।

जैसे जैसे दिन गुजरते गये उसने महसूस किया कि उसकी छोटी से छोटी इच्छा वहाँ उसके कहने से पहले ही पूरी हो जाती थी।

इस सबसे उसे ऐसा लगने लगा कि यह जानवर उसको बहुत चाहता है। और उसको इस बात का दुख होने लगा कि हर रात

जब भी वह उससे अपनी शादी बात करता और वह ना कर देती तो वह कितना दुखी हो कर वहाँ से जाता था।

एक दिन उसने उस शीशे में देखा कि उसके पिता बीमार थे तो उस रात उसने उस जानवर से कहा — "ओ जानवर, तुम हमेशा से मेरे लिये बहुत अच्छे रहे हो। क्या तुम मुझे मेरे पिता को देखने जाने दोगे? वह बहुत बीमार हैं और यह सोचते हैं कि शायद मैं मर चुकी हूँ।

मेहरबानी करके मुझे उनको देखने जाने दो। वह मुझको देख कर खुश हो जायेंगे। मैं तुमसे वायदा करती हूँ कि मैं सचमुच में वापस आ जाऊँगी।"

जानवर बड़ी नरमी से बोला — "ठीक है। तुम जाओ पर देखो एक हफ्ते से ज़्यादा नहीं रहना क्योंकि अगर तुम इससे ज़्यादा रहीं तो मैं तुम्हारे बिना दुख से मर जाऊँगा। क्योंकि मैं तुमको बहुत प्यार करता हूँ।"

सुन्दरी बोली — "पर मैं यहाँ से जाऊँ कैसे मुझको तो रास्ता ही नहीं मालूम।"

तब जानवर ने उसको एक अँगूठी दी और कहा कि जब वह सोने जाये तो उस अँगूठी को अपनी उँगली में पहन ले। उसमें लगा लाल वह अपनी हथेली की तरफ कर ले। इससे अगली सुबह जब वह उठेगी तो अपने पिता के घर में ही उठेगी। जब वह वापस

आना चाहेगी तो वह फिर उसी तरह करेगी तो वह यहाँ आ जायेगी।

उसने ऐसा ही किया। अगले दिन सुबह वह अपने पिता के घर में थी।

अपनी बेटी को अपने पास देख कर उसका पिता बहुत खुश हुआ पर उसकी बहिनों को उसका आना अच्छा नहीं लगा। और जब उन्होंने यह सुना कि वह जानवर उसके साथ कितनी अच्छी तरह से बरताव करता है तो उनको उसके अच्छे भाग्य से जलन होने लगी।

वह तो कितने अच्छे महल में रहती है जबकि वे एक छोटे से मकान में रहती हैं। मैरीगोल्ड बोली — "काश हम वहाँ चले जाते तो हम भी ऐसे ही रहते। सुन्दरी को हमेशा ही सबसे अच्छी चीज़ मिल जाती है।"

ड्रैसैलिन्डा सुन्दरी से बोली — "अच्छा ज़रा अपने महल के बारे में भी तो कुछ बताओ। तुम वहाँ क्या करती हो? कैसे बिताती हो अपना समय?"

सो सुन्दरी ने यह सोचते हुए कि यह सब उनको सुनने में अच्छा लगेगा अपनी सब बातें उनको बतायीं। और वह सब सुन सुन कर हर दिन उनकी जलन बढ़ती ही गयी।

आखिर ड्रैसैलिन्डा ने मैरीगोल्ड से कहा — "सुन्दरी ने उसको एक हफ्ते में वापस आने के लिये कहा है अगर हम उसको यह बात

किसी तरह भुला दें तो वह जानवर उससे नाराज हो जायेगा और उसको मार देगा। फिर हम लोगों को मौका मिल सकता है।"

सुन्दरी को अगले दिन जानवर के पास वापस जाना था। सो अगले दिन सुन्दरी के वापस जाने से पहले उन्होंने सुन्दरी के शराब के गिलास में पौपी[13] का रस मिला दिया जिसने उसको इतना सुलाया कि वह पूरे दो दिन और दो रात सोती रही।

अपनी नींद के आखिरी समय में उसने एक सपना देखा और उस सपने में उसने उस जानवर को उसके महल के बागीचे में गुलाबों के बीच में मरा पड़ा देखा। वह बहुत ज़ोर से रोते हुए उठ गयी।

हालॉकि उसको यह पता नहीं चला कि जानवर को छोड़े हुए उसको एक हफ्ते के ऊपर दो दिन और हो गये हैं फिर भी उसने अपनी अँगूठी का लाल अपनी हथेली की तरफ किया और सो गयी।

अगली सुबह जब वह उठी तो जानवर के महल में अपने बिस्तर पर थी। अब उसको यह तो नहीं मालूम था कि उस महल में उस जानवर के कमरे कहॉ हैं पर वह शाम के खाने तक का इन्तजार नहीं कर सकती थी।

[13] Poppy is a kind of flower – see its picture above.

उसको लगा कि उसको जानवर को अभी अभी देखना चाहिये। सो वह महल में उसका नाम पुकारते हुए इधर से उधर भागने लगी।

वह सारा बागीचा छान आयी पर उसका कहीं पता नहीं था। वह बोली — "ओह, अब मैं क्या करूँ मुझे तो वह कहीं मिल ही नहीं रहा। अब मैं फिर कभी खुश नहीं रह पाऊँगी।"

फिर उसको अपना सपना याद आया तो वह गुलाब के बागीचे में भागी गयी। वहाँ बड़े फव्वारे के पास वह बड़ा जानवर मरा पड़ा था। सुन्दरी तुरन्त ही उसके पास घुटनों के बल बैठ गयी।

वह रोते रोते बोली — "ओह प्यारे जानवर, क्या तुम वाकई मर गये हो? अगर ऐसा है तो मैं भी मर जाऊँगी। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती।"

लो यह सुन कर वह जानवर तो तुरन्त ही उठ कर बैठा हो गया और एक लम्बी सी साँस भर कर बोला — "सुन्दरी, क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

उसको ज़िन्दा देख कर तो सुन्दरी बहुत ही खुश हो गयी। वह बिना सोचे समझे तुरन्त बोली — "हाँ हाँ, मैं तुमसे शादी करूँगी क्योंकि मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ।"

बस जैसे ही सुन्दरी ने यह कहा तो उस जानवर के खुरदरे बाल नीचे गिर पड़े और वहाँ जानवर के बदले में एक बहुत सुन्दर

राजकुमार खड़ा हुआ था। उसने सफेद और रुपहला सूट पहना हुआ था जैसा कि लोग शादी के समय पहनते हैं।

वह सुन्दरी के पैरों के पास बैठ गया और ताली बजायी और बोला — "प्रिय सुन्दरी, तुम्हारे प्यार के अलावा मेरे ऊपर का यह जादू और कोई नहीं तोड़ सकता था।"

तब राजकुमार ने सुन्दरी को अपनी कहानी सुनायी — "एक नीच परी ने मुझे जानवर में बदल दिया था। और मुझे तब तक इसी हालत में रहना था जब तक कि कोई कुँआरी लड़की मुझसे मेरी बदसूरती और बेवकूफी के बावजूद इतना प्यार न करने लगे कि वह मुझसे शादी करने के लिये तैयार हो जाये।

अब मेरा वह जादू टूट गया है। चलो प्रिये, अब हम अपने महल चलते हैं।

अब तुमको वहाँ मेरे सारे नौकर चाकर दिखायी देंगे। वे पहले इसलिये दिखायी नहीं देते थे क्योंकि उस परी ने उन सबके ऊपर भी जादू डाल दिया था। वे अब तक तुमको दिखायी दिये बिना ही तुम्हारी सेवा करते रहते थे। अब तुम उनको देख पाओगी।"

वे अपने महल में लौट आये। अब महल में खूब धूमधाम हो रही थी। वहाँ बहुत सारे राज दरबारी इधर उधर घूम रहे जो बड़ी बेसब्री से राजकुमार और राजकुमारी का हाथ चूमने का इन्तजार कर रहे थे।

वहाँ बहुत सारे नौकर भी इधर इधर घूम रहे थे। राजकुमार ने एक नौकर के कान में कुछ फुसफुसाया जिसे सुन कर वह बाहर चला गया और सुन्दरी के पिता और बहिनों को ले कर वापस आ गया।

सुन्दरी की बहिनों को मूर्तियाँ बना दिया गया और उनको महल के दरवाजे को दोनों तरफ खड़ा कर दिया गया जब तक कि उनके दिल नरम न हो जायें और वे अपनी बहिन के साथ किये गये बुरे बरताव पर पछताने न लगें।

सुन्दरी की राजकुमार के साथ शादी तो हो गयी पर सुन्दरी छिपे छिपे अपनी बहिनों की मूर्तियों को पास रोज जाती थी और रोती थी।

उसके ऑसुओं ने उन पत्थर दिल मूर्तियों के दिलों को भी नरम कर दिया और वे फिर से ज़िन्दा हो गयीं और फिर ज़िन्दगी भर हर एक के लिये नरम दिल और दयावान रहीं।

सुन्दरी भी अपने जानवर के साथ जो अब जानवर नहीं था बल्कि एक सुन्दर राजकुमार था हँसी खुशी रही। मेरे ख्याल से वे अभी भी उस देश में खुशी खुशी रह रहे होंगे जहाँ सपने सच हो जाते हैं।

4 नौजवान दासी[14]

मैं तुम्हारे लिये क्या लाऊँ कहानी जैसी एक और कहानी। यह कहानी हमने तुम्हारे लिये यूरोप के इटली देश की कहानियों से ली है।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक जगह सर्वा स्कूरा का बैरन[15] रहा करता था। उसकी एक छोटी बहिन थी सिलिया[16] जो बहुत सुन्दर थी। वह दूसरी सुन्दर लड़कियों के साथ बागीचे में घूमा करती थी।

एक दिन जब वह रोज की तरह बागीचे में घूम रही थी तो उसको एक गुलाब का पेड़ दिखायी दिया। उसके ऊपर एक लाल रंग का गुलाब का फूल पूरा खिला हुआ था।

उन लड़कियों ने आपस में कहा कि जो कोई भी उस गुलाब के ऊपर से बिना उसको छुए कूद जायेगा वह यह यह जीतेगा। सो उन लड़कियों ने एक के बाद एक उसके ऊपर से कूदना शुरू किया पर कोई भी लड़की उसके ऊपर से उसको बिना छुए नहीं कूद सकी।

---

[14] The Young Slave – a folktale from Italy, Europe. Adapted from the Book "Il Pentamerone: or, The Tale of Tales", translated by Richard Burton, Vol 1, Story No 8. Its English version may be read at http://www.pitt.edu/~dash/type0709.html#youngslave

[15] Baron – is a title of honor, often hereditary, and ranks as one of the lower titles in the various nobility systems of Europe. The female equivalent is Baroness.

[16] Cilia – name of the sister of the Baron.

फिर सिलिया की बारी आयी तो वह थोड़ी दूर से तेज़ दौड़ कर कूदी और फूल को बिना छुए ही उसको पार कर गयी पर फिर भी उससे उस फूल की एक पत्ती नीचे गिर गयी।

कोई और न देख ले इसलिये उसने उस पत्ती को तुरन्त उठा लिया और खा लिया और इस तरह वह शर्त जीत गयी।

मुश्किल से तीन दिन ही बीते होंगे कि उसको लगा कि उसको बच्चे की आशा हो गयी है। यह जान कर तो वह दुख से मर ही गयी। वह यह जान ही न सकी कि ऐसा कैसे हुआ।

वह यह सब बदनामी अपने सिर नहीं लेना चाहती थी सो वह कुछ परियों के घर गयी और उनसे अपना मामला कहा। उन्होंने कहा कि इसमें कोई शक नहीं था कि उस गुलाब की पत्ती की वजह से ही वह मॉ बनने वाली थी जो उसने शर्त जीतने के लिये निगल ली थी।

यह सुन कर सिलिया ने अपनी हालत जब तक उससे छिपायी जा सकी छिपायी पर एक समय आया जब उसने एक बच्ची को जन्म दिया।

उसकी बच्ची का चेहरा चौदहवीं के चॉद जैसा सुन्दर था। उसने उस बच्ची का नाम लिसा[17] रख दिया और उसको बड़ा होने के लिये परियों के घर भेज दिया।

[17] Lisa – the name of the daughter of Cilia

वहाँ जा कर हर परी ने उसको एक जादू दिया पर आखिरी परी भाग कर उसको देखना चाहती थी कि उस भागने में उसका पैर मुड़ गया और गुस्से और दर्द में उसने उस बच्ची को शाप दिया कि जब वह सात साल की होगी तो उसकी माँ उसके बालों में कंघी करते समय कंघी भूल जायेगी और इससे वह मर जायेगी।

सो यह समय भी निकला और फिर वह समय भी आया जब लिसा की माँ कंघी करते हुए उसके सिर में कंघी भूल गयी और उसकी बेटी लिसा मर गयी।

सिलिया अपनी इस बदकिस्मती पर बहुत दुखी हुई। रोते धोते उसने सात क्रिस्टल के बक्से बनाने का हुकुम दिया जो एक के अन्दर एक आ जाते।

उनमें से सबसे छोटे वाले बक्से में उसने लिसा को लिटाया और फिर उन बक्सों को उसने महल के एक बहुत ही दूर के कमरे में रखवा दिया और उस कमरे की चाभी अपने जेब में रख ली।

दिन पर दिन उसकी हालत बहुत खराब होती गयी। और जब उसको लगा कि अब वह मरने वाली है तो उसने अपने भाई को बुला भेजा।

उसने उससे कहा — "भैया। मुझे लग रहा है कि मैं धीरे धीरे मर रही हूँ इसलिये मैं अपनी सारी चीज़ें तुमको सौंप कर जा रही हूँ।

क्योंकि तुम ही अकेले इन सब चीज़ों के मालिक हो इसलिये तुम यह कसम खाओ कि तुम महल के उस दूर वाले कमरे को कभी नहीं खोलोगे। यह उस कमरे की चाभी है और इसको तुम सँभाल कर अपनी मेज के अन्दर रखना।"

सिलिया का भाई सिलिया को बहुत प्यार करता था। उसने सिलिया से वायदा किया कि वह महल के उस दूर वाले कमरे को कभी नहीं खोलेगा।

इस विश्वास के साथ सिलिया ने उसको विदा कहा और मर गयी।

एक साल के बाद बैरन ने शादी कर ली। एक दिन उसके दोस्तों ने उसको शिकार के लिये न्यौता दिया तो उसने अपने महल की जिम्मेदारी अपनी पत्नी के ऊपर छोड़ी और शिकार पर चल दिया। जाते समय उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह महल का वह दूर वाला कमरा न खोले।

पर स्त्री का स्वभाव तो ऐसा ही होता है कि जिस काम को उसको मना किया जाता है वह उस काम को जरूर करती है।

जैसे ही बैरन शिकार पर गया उसकी पत्नी के मन में कुछ शक पैदा हुआ कि उसके पति ने उसको वह कमरा खोलने से क्यों मना

किया सो उसने बैरन की मेज से चाभी निकाली और वह कमरा खोलने चल दी।

वहाँ जा कर उसने दरवाजा खोला तो देखा कि उसमें सात क्रिस्टल के बक्से रखे हुए हैं। और उनमें से सबसे छोटे बक्से के अन्दर एक बहुत सुन्दर बच्ची सो रही है।

वह बच्ची अपनी उम्र के साथ साथ बड़ी हो रही थी और सो उसके साथ साथ बड़े हो रहे थे उसके वे बक्से भी।

उस बच्ची को देख कर वह जल गयी और उसने चिल्लाना शुरू किया — "ओह मेरे भगवान, चाभी कमर के नारे में और भैंसा उसके अन्दर। तो यह वजह थी मेरे इस कमरे का दरवाजा न खोलने की ताकि मैं मुहम्मद को न देख सकूँ जिसको वह इतने दिनों से पूजता रहा है।"

यह कहते हुए उसने उस बच्ची को उसके बालों से पकड़ कर उस क्रिस्टल के बक्से से बाहर खींच लिया। उसके बालों के इस तरह खींचने में उस बच्ची की माँ ने जो कंघी उसके बालों में लगी छोड़ दी थी वह निकल कर बाहर आ गयी और वह बच्ची ज़िन्दा हो गयी।

ज़िन्दा होते ही वह बच्ची चिल्लायी — "ओ मेरी माँ। ओ मेरी माँ।"

बैरन की पत्नी बोलीी — "आ मैं तुझे देती हूँ तेरी मॉ और तेरे पिता जी।" कह कर उसने गुस्से में आ कर उसने उसकी खूब पिटायी की।

उसने उसको एक दासी की तरह के कपड़े पहना दिये और उस बच्ची के सुन्दर बाल कटवा दिये। अब वह उस पर कड़ी नजर रखने लगी।

बैरन जब शिकार पर से वापस लौट कर आया तो इतनी छोटी सी बच्ची के साथ इतना बुरा बरताव करते देख कर उसने अपनी पत्नी से पूछा कि वह उसके साथ इतना बेरहम और बुरा बरताव क्यों कर रही थी।

उसकी पत्नी ने बताया कि वह एक दासी थी जिसको उसकी एक चाची ने उसके पास भेजा था। और यह दासी इतनी खराब थी कि उसको डॉट कर रखना बहुत जरूरी था ताकि वह ठीक से काम कर सके।

कुछ समय बाद वह बैरन गॉब के एक मेले में गया और क्योंकि वह एक बहुत ही दयावान और बहुत ही अच्छा भला कुलीन आदमी था उसने अपने घर में सबसे बड़े से ले कर सबसे छोटे तक, यहॉ तक कि अपनी बिल्लियों से भी, सभी से यह पूछा कि वह उस मेले से उनके लिये क्या ले कर आये।

किसी ने कुछ कहा तो किसी ने कुछ। आखीर में नम्बर आया उस दासी लड़की का।

पर उसकी पत्नी बोली — "इस दासी को छोड़ो। हमको अपने सारे काम अपने नियमों में रह कर ही करने चाहिये जैसे हम सब अपना खाना एक ही बरतन में बनाते हैं। तुम इसको छोड़ दो। इसको बहुत ज़्यादा बिगाड़ने की जरूरत नहीं है।"

पर बैरन क्योंकि बहुत ही दयावान था वह उससे पूछता ही रहा कि वह उसके लिये मेले से क्या ले कर आये।

आखिर उस बच्ची ने जवाब दिया — "मुझे एक गुड़िया चाहिये, एक चाकू चाहिये और थोड़ा सा प्यूमिस पत्थर[18] चाहिये। और अगर आप यह लाना भूल जायें तो आपके रास्ते में जो नदी पड़ती है आप उसको पार न कर सकें।"

यह सुन कर बैरन चला गया। वहाँ जा कर उसने जिस जिसके लिये जो भी सामान खरीदना था खरीद लिया पर वह वह सामान खरीदना भूल गया जो उसकी बहिन की लड़की ने उसको लाने के लिये कहा था।

जब घर आते समय वह नदी के किनारे आया तो नदी ने पत्थर फेंकने शुरू कर दिये और वह पहाडों से पेड़ बहा कर ले जाने लगी। यह देख कर बैरन डर गया और आश्चर्य में पड़ गया।

तब उसको उस नौजवान दासी का शाप याद आया। वह तुरन्त ही मेले वापस लौट गया और उस बच्ची की तीनों चीज़ें ले कर

[18] Pumice stone is lighter than the water and thus can float on it. It is believed that Shree Raam built His bridge to Lankaa by those stones only.

आया। तब कहीं जा कर वह नदी पार कर सका और अपने घर लौट सका।

घर आ कर उसने सबकी चीज़ें सबको दे दीं। जैसे ही उस बच्ची को उसकी चीज़ें मिलीं वह रसोईघर में चली गयी। उसने वह गुड़िया अपने सामने रख ली और रोने लगी।

वह उस बेजान लकड़ी की गुड़िया से अपनी कहानी ऐसे कह रही थी जैसे किसी जानदार आदमी से कह रही हो।

उसने देखा कि वह गुड़िया तो कोई जवाब नहीं दे रही थी तो उसने अपना चाकू उठाया, उसको प्यूमिस पत्थर पर तेज़ किया और उस गुड़िया से बोली — "अगर तू मुझसे नहीं बोली तो मैं अपने आपको मार लूँगी और इस तरह अपना अन्त कर लूँगी।"

यह सुन कर वह लकड़ी की गुड़िया बैग पाइप[19] बाजे की तरह फूल गयी और बोली — "मैं तुझे सुन रही हूँ मैं कोई बहरी नहीं हूँ।" ऐसा कई दिनों तक चलता रहा।

बैरन की एक तस्वीर रसोईघर के पास ही लटक रही थी। तो एक दिन बैरन जब उधर से गुजर रहा था तो उसने रसोईघर से आती उस नौजवान दासी की ये रोने और बातें करने की आवाजें सुनी तो उसको यह जानने की उत्सुकता हुई कि वह किससे बात कर रही थी।

[19] Bag Pipe is kind of wind music instrument – see its picture above.

उसने चाभी के छेद में से देखा कि लिसा के सामने वह गुड़िया रखी है जो वह उसके लिये मेले से लाया था और वह उसको बता रही थी कि कैसे उसकी मॉ उस गुलाब के पेड़ के ऊपर से कूद गयी थी, फिर कैसे उसने उस गुलाब के फूल की पत्ती खा ली थी और फिर कैसे वह पैदा हुई थी।

फिर कैसे सारी परियों ने उसको जादू दिये और फिर कैसे आखिरी परी ने उसको शाप दिया कि उसकी मॉ उसके बालों में कंघी लगी छोड़ कर भूल जायेगी और वह मर जायेगी।

फिर कैसे उसको सात क्रिस्टल के बक्सों के अन्दर रखा गया और उन बक्सों को महल के दूर के कमरे में रखवा दिया गया। फिर कैसे उसकी मॉ मर गयी और वह उस कमरे की चाभी अपने भाई के पास छोड़ गयी।

फिर उसने उस गुड़िया को यह भी बताया कि किस तरह बैरन शिकार पर गया और कैसे उसकी पत्नी ने जल कर अपने पति का हुकुम नहीं माना।

फिर कैसे वह उस दूर वाले कमरे में घुसी और फिर कैसे उसके बाल काटे। फिर कैसे उसको दासी की तरह रखा और फिर किस तरह उसको बेरहमी से पीटा।

आखीर में वह रोते हुए बोली — "अब बता मेरी गुड़िया, तू क्या कहती है? क्या मैं इस चाकू से अपनी जान न ले लूँ?"

यह कहते हुए वह पास में रखे प्यूमिस पत्थर पर चाकू तेज़ करने लगी।

चाकू तेज़ करके वह अपने आप को मारने ही वाली थी कि बैरन ने पैर से एक ठोकर मार रसोईघर का दरवाजा तोड़ दिया और उस बच्ची के हाथ से चाकू छीन लिया।

उसने उसको अपनी कहानी सुनाने के लिये कहा। जब उसने अपनी कहानी उसको सुना दी तो बैरन ने उसको अपने गले से लगा लिया और उसको महल से बाहर अपने एक रिश्तेदार के घर भेज दिया।

वहाँ जा कर उसने अपने उस रिश्तेदार से कहा कि बुरे बरताव की वजह से वह लड़की शरीर और मन दोनों से बहुत ही बीमार है और अपनी सुन्दरता खो चुकी है।

सो वे उसका इतने अच्छे तरीके से ख्याल रखें कि वह शरीर और मन दोनों तरीके से तन्दुरुस्त हो जाये और उसके चेहरे की ताजगी वापस आ जाये।

लिसा को वहाँ बहुत अच्छे से रखा गया और कुछ ही महीनों में वह एक बहुत सुन्दर देवी की तरह दिखायी देने लगी। उसके बाद उसके मामा ने उसको अपने महल में बुला लिया और उसके आने की खुशी में एक बहुत बड़ी दावत दी।

बैरन ने उस दावत में आये हुए लोगों से अपनी भान्जी[20] के रूप में लिसा का परिचय कराया और बाद में उसको सबके सामने अपनी कहानी सुनाने के लिये कहा। सब लोग लिसा के साथ बैरन की पत्नी बेरहम बरताव सुन कर रो पड़े।

बैरन को उसकी पत्नी का वह जलन भरा बरताव बिल्कुल अच्छा नहीं लगा था सो उसने अपनी पत्नी को उसके घर भेज दिया। कुछ दिनों बाद उसने अपनी भानजी की शादी एक बहुत ही अच्छे लायक नौजवान से कर दी जिसको वह पसन्द करती थी।

[20] Translated for the word “Niece” – here it means “sister’s daughter”.

5 सिन्डरैला–1[21]

सिन्डरैला जैसी यह कहानी यूरोप महाद्वीप के इटली देश की कहानियों से ली गयी है। यह कहानी भी बहुत पुरानी है, सन् 1885 की।

एक बार की बात है कि एक आदमी के तीन बेटियाँ थीं। एक बार उसको किसी काम से बाहर जाना पड़ा तो उसने अपनी बेटियों से कहा — "मैं किसी काम से बाहर जा रहा हूँ बोलो मैं तुम लोगों के लिये क्या ले कर आऊँ।"

बड़ी वाली बेटी बोली — "पिता जी, मेरे लिये एक बहुत सुन्दर सी पोशाक ले कर आना।"

दूसरी ने कहा — "पिता जी, मेरे लिये एक बहुत अच्छा सा टोप और एक शाल ले कर आना।"

फिर उसने अपनी सबसे छोटी बेटी से पूछा — "और तुम्हारे लिये सिन्डरैला? तुम्हें क्या चाहिये?"

सब उसको सिन्डरैला ही कह कर पुकारते थे क्योंकि वह हमेशा चिमनी के पास वाले कोने में ही बैठी रहती थी।

---

[21] Cinderella – a fairy tale from Italy, Europe.
This story is taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0510a.html#perrault
Charles Perrault took it from Italian Popular Tales by Thomas Frederick Crane. London, Macmillan and Company, 1885, no. 9, pp. 42-47.
Translated and edited by DL Ashliman.
This story can be read in English at http://www.pitt.edu/~dash/type0510a.html#perrault or at the Web Site : http://www.surlalunefairytales.com/authors/crane/cinderella.html

वह बोली — "पिता जी, मेरे लिये एक छोटी वरडैलियो चिड़िया[22] ले कर आना।"

"बेचारी सीधी सादी लड़की। यह बेचारी तो यह भी नहीं जानती थी कि उस चिड़िया का यह करेगी क्या। बजाय किसी सुन्दर पोशाक मॅगाने के या फिर कोई शाल मॅगाने के उसने एक चिड़िया चुनी। किसी को पता नहीं कि यह उसका करेगी क्या।"

सिन्डरैला बोली — "चुप। वह मुझे अच्छी लगती है बस इसी लिये मैंने पिता जी से उसे लाने के लिये कहा।"

उनका पिता चला गया और जब वह लौटा तो सिन्डरैला की दोनों बड़ी बहिनों के लिये पोशाक, शाल और टोप और सिन्डरैला के लिये वरडेलियो चिड़िया ले कर आया।

उनका पिता शाही दरबार में काम करता था। एक दिन राजा ने उनके पिता से कहा — "मैं तीन दिन के नाच का इन्तजाम कर रहा हूँ। तुम अगर अपनी बेटियों को यहॉ लाना चाहते हो तो तुम भी उनको यहॉ ले कर आ सकते हो। वे भी शाही नाच का थोड़ा आनन्द लेंगी।"

उसने जवाब दिया — "जैसी आपकी इच्छा। बहुत बहुत धन्यवाद।"

और वह राजा की बात सुन कर घर आ गया।

[22] Verdalio bird – a small bird

जब वह घर गया तो उसने अपनी बेटियों से कहा — "लड़कियों तुम क्या सोचती हो? राजा ने तुम सबको अपने यहाँ नाच में बुलाया है।"

"देखा सिन्डरैला। अगर तूने भी एक बहुत सुन्दर सी पोशाक मँगवायी होती तो... । तुझे मालूम है कि आज शाम को हम सब राजा के यहाँ नाच में जा रहे हैं।"

सिन्डरैला बोली — "मुझे उससे कोई मतलब नहीं है। तुमको जाना हो तो जाओ मैं नहीं आ रही।"

शाम को जब नाच में जाने का समय आया तो सिन्डरैला की दोनों बहिनें खूब सजीं और गाड़ी में बैठते हुए सिन्डरैला से बोलीं — "आजा सिन्डरैला। तेरे लिये भी जगह है यहाँ।"

पर सिन्डरैला ने फिर वही जवाब दिया — "मुझे नहीं जाना तुमको जाना हो तो जाओ। मैं नहीं आ रही।"

पिता बोला — "चलो हम लोग चलते हैं। तैयार हो जाओ और चलो। अगर वह यहाँ रुकना चाहती है तो उसको रुकने दो। तुम लोग उससे जिद क्यों करती हो।" सो वे सब चले गये।

जब वे सब चले गये तो सिन्डरैला अपनी वरडैलियो चिड़िया के पास गयी और बोली — "ओ मेरी छोटी वरडैलियो चिड़िया, जैसी मैं हूँ मुझे उससे भी और ज़्यादा सुन्दर बना दो।"

चिड़िया ने वैसा ही किया। उसको समुद्री हरे रंग की पोशाक पहनायी जिस पर इतने सारे हीरे लगे हुए थे कि उसकी तरफ देखने पर वे ऑखों को चौंधियाते थे।

चिड़िया ने उसके लिये पैसों के दो बटुए तैयार किये और उनको उसको देते हुए कहा — "लो ये दो बटुए लो, अपनी गाड़ी में बैठो और जाओ।"

वह गाड़ी में बैठी और राजा के महल में नाच के लिये चल दी। वरडैलियो चिड़िया को उसने घर में ही छोड़ दिया। वह नाच के कमरे में घुसी। वहॉ बैठे किसी भी आदमी ने कभी मुश्किल से ही इतनी सुन्दर लड़की कहीं देखी होगी। वे सब उसी को देखे जा रहे थे।

जब राजा ने उसके साथ नाचना शुरू किया तो ज़रा सोचो क्या हुआ होगा। वह तो बस सारी शाम उसी के साथ ही नाचता रहा। सारी शाम नाचने के बाद ही राजा रुक सका। नाच के बाद सिन्डरैला अपनी बहिनों के पास जा कर खड़ी हो गयी।

जब वह अपनी बहिनों के पास खड़ी हुई थी तो उसने अपना रूमाल निकाला तो उसका एक ब्रेसलैट[23] नीचे गिर पड़ा। उसकी सबसे बड़ी बहिन बोली — "मैम, आपका यह ब्रेसलैट गिर गया।"

[23] Bracelet – an ornament to be worn in wrist – see its picture above.

वह बोली — "कोई बात नहीं तुम रख लो।"

उसकी बड़ी बहिन ने सोचा — "ओह काश सिन्डरैला यहाँ होती। कौन जानता है कि उसको क्या नहीं हो गया होता।"

राजा उस लड़की से प्यार करने लगा था सो उसने अपने नौकरों को हुकुम दिया कि जब यह लड़की यहाँ से जाये तो उसका पता करो कि वह कहाँ रहती है। कुछ देर वहाँ ठहरने के बाद सिन्डरैला वहाँ से चली गयी।

तुम लोग सोच सकते हो कि जो नौकर उसका घर देखने के लिये लगाये गये थे उन्होंने क्या किया होगा।

वे उसके पीछे पीछे चले। सिन्डरैला ने देखा कि कुछ लोग उसके पीछे पीछे आ रहे हैं तो उसने अपना बटुआ निकाला और उसमें से कुछ पैसे निकाल कर गाड़ी की खिड़की से बाहर फेंकने शुरू कर दिये।

लालची नौकरों ने वे पैसे देख कर उस लड़की के बारे में तो सोचना छोड़ दिया और रुक कर वे पैसे उठाने लगे।

जब वे पैसे उठा रहे थे तो वह घर चली गयी और फिर ऊपर चली गयी। वहाँ जा कर वह फिर अपनी वरडैलियो चिड़िया के पास गयी और बोली कि वह उसको फिर से वैसी ही बना दे जैसी कि वह पहले थी। उस चिड़िया ने उसको फिर से वैसी ही बना दिया।

जब सिन्डरैला की बहिनें नाच से लौटीं तो बोलीं — "ओह सिन्डरैला।"

उसका पिता बोला — "उसको छोड़ दो। वह सो रही है। छोड़ दो उसको।"

पर वे ऊपर गयीं और उसको वह बड़ा सुन्दर ब्रेसलैट दिखाया और कहा — "देख रही है न इसे? ओ सीधी सादी लड़की। यह तुझे भी मिल सकता था।"

"मुझे इससे कुछ लेना देना नहीं है तुम रख लो इसको।"

उनके पिता ने कहा — "चलो खाना लगाओ।"

उधर राजा अपने नौकरों के लौटने का इन्तजार कर रहा था कि वे आयेंगे और उसको उस लड़की के घर का पता बतायेंगे। पर उनकी राजा के सामने जाने की हिम्मत ही नहीं पड़ रही थी।

तब उसने उनको खुद बुलाया और उनसे पूछा — "क्यों कैसा रहा? पता लगाया तुमने उस लड़की के घर का?"

वे सब उसके पैरों पर गिर पड़े और बोले — "मालिक, उसने इतना सारा पैसा फेंका कि ...।"

राजा चिल्लाया — "नीच, तुम लोग कुछ नहीं कर सकते। तुम लोगों को क्या यह लग रहा था कि तुम लोगों को इस तरह के काम का कोई इनाम नहीं मिलेगा? कोई बात नहीं, कल शाम को ध्यान

रखना, चाहे तुमको कितना भी तकलीफ क्यों न हो पर तुमको उसके घर का पता लगा कर ही लाना है।"

अगली शाम को दोनों बहिनों ने कहा — "तू भी आ रही है न सिन्डरैला हमारे साथ?"

सिन्डरैला बोली — "नहीं, मुझे तंग मत करो। मुझे नहीं जाना।"

उनका पिता चिल्लाया — "तुम लोग उसको बहुत तंग करती हो। उसे छोड़ दो न। क्यों उसके पीछे पड़ी हो जब वह नहीं जाना चाहती तो।"

सो वे दोनों तैयार होने चली गयीं, पहली शाम से भी ज़्यादा अच्छी तरह से। और तैयार हो कर नाच में चली गयीं — "बाई सिन्डरैला।"

उनके जाने के बाद सिन्डरैला फिर अपनी वरडैलियो चिड़िया के पास गयी और बोली — "ओ मेरी छोटी वरडैलियो चिड़िया, मुझे बहुत सुन्दर बना दो।"

चिड़िया ने उसको समुद्री हरे रंग की पोशाक में सजा दिया जिसके ऊपर बहुत सारी मछलियाँ कढ़ी हुई थीं और उसमें इतने हीरे लगे हुए थे जितने तुम सोच भी नहीं सकते।

फिर उसने सिन्डरैला को दो थैले रेत दिया और कहा — "ये दो थैले रेत ले जाओ। जब तुम देखो कि तुम्हारे पीछे लोग आ रहे हैं तो इस रेत को फेंक देना। इससे उनको कुछ दिखायी नहीं देगा।"

वह गाड़ी में बैठी और नाच के लिये चल दी। जब वह नाच वाले कमरे में पहुँची और राजा ने उसे देखा तो बस वह तो फिर से सारी शाम उसी के साथ नाचता रहा जब तक वह थक नहीं गया। हालॉकि सिन्डरैला नहीं थकी थी।

नाच के बाद सिन्डरैला फिर से अपनी बहिनों के पास जा कर खड़ी हो गयी। वहॉ जा कर उसने फिर से अपना रूमाल निकाला तो इस बार उसका हार नीचे गिर गया।

इस बार उसकी दूसरी बहिन ने कहा — "मैम, आपका यह हार नीचे गिर गया।"

सिन्डरैला ने कहा — "कोई बात नहीं। तुम रख लो।"

"उफ़ अगर सिन्डरैला यहॉ होती तो कौन जाने उसके साथ क्या नहीं होता। कल उसको यहॉ जरूर आना चाहिये।"

कुछ देर बाद सिन्डरैला वहॉ से चली गयी। राजा के नौकर सावधान थे सो उसके वहॉ से जाते ही वे सब उसके पीछे पीछे चल दिये।

जब सिन्डरैला ने देखा कि लोग उसका पीछा कर रहे हैं तो उसने अपनी गाड़ी की खिड़की से पीछे की तरफ रेत फेंक दी जिससे राजा के आदमी कुछ देख नहीं सके और सिन्डरैला वहॉ से निकल गयी। राजा के आदमी फिर ऐसे ही वापस आ गये।

घर आ कर वह फिर ऊपर गयी और अपनी चिड़िया से बोली — "ओ मेरी छोटी वरडेलियो चिड़िया, मुझे पहले जैसा बना दो।" चिड़िया ने उसको फिर से वैसा ही बना दिया।

जब उसकी बहिनें नाच से वापस आयीं तो उन्होंने नीचे से ही उससे बात करना शुरू कर दिया — "ओह सिन्डरैला, अगर तू जानती कि उस लड़की ने मुझे क्या दिया।"

सिन्डरैला तुरन्त बोली — "मुझे इससे कोई मतलब नहीं कि उस लड़की ने तुमको क्या दिया।"

"नहीं नहीं, तुझको उसे देखना ही चाहिये।"

पिता बोला — "चलो खाना खाने चलें। उसको छोड़ो। तुम लोग तो वाकई बहुत ही बेवकूफ हो।"

अब हम मैजेस्टी के पास चलते हैं जो यह जानने के लिये अपने नौकरों का इन्तजार कर रहा था कि वह लड़की कहाँ रहती है। पर यह जानने के बदले में तो वे लोग रेत से अन्धे हो कर लौट आये थे।

राजा उन पर फिर चिल्लाया — "तुम लोग तो एक रोग हो। या तो यह लड़की खुद ही कोई परी है और या फिर कोई परी इसकी सहायता कर रही है।"

अगले दिन जब वे बहिनें फिर से नाच में जाने के लिये तैयार होने लगीं तो उन्होंने सिन्डरैला से कहा — "सिन्डरैला, चल आज तू

भी चल। सुन आज की शाम आखिरी शाम है। आज तो तुझे हमारे साथ चलना ही चाहिये।"

पिता बोला — "तुम लोग उसको छोड़ दो न। तुम लोग हमेशा ही उसको क्यों तंग करती रहती हो।"

यह सुन कर वे तैयार होने चली गयीं और तैयार हो कर अपने पिता के साथ नाच के लिये चली गयीं।

जब वे सब चले गये तो सिन्डरैला फिर से अपनी चिड़िया के पास गयी और उससे बोली — "ओ मेरी छोटी वरडैलियो चिड़िया, तू मुझे आज बहुत सुन्दर बना दे।"

उस दिन चिड़िया ने उसको इन्द्रधनुषी रंगों की पोशाक में सजाया। उसकी इस पोशाक पर चॉद तारे बने हुए थे और सूरज उसकी भौंह पर था।

इस तरह वह नाच के कमरे में घुसी। आज कौन उसकी तरफ देख सकता था। उसकी भौंह पर लगा सूरज ही सबको चौंधा देने के लिये काफी था।

राजा ने उसके साथ नाचना तो शुरू किया पर आज तो वह उसकी तरफ देख ही नहीं सका। आज तो उसकी ऑखें ही चौंधिया रही थीं।

आज राजा ने अपने नौकरों को पहले से ही हुकुम दे रखा था कि वह उस लड़की का ध्यान रखें और आज वे उसका पैदल पीछा न करें बल्कि अपने अपने घोड़ों पर पीछा करें।

सिन्डरैला ने आज पहले दो दिनों के मुकाबले में ज़्यादा देर नाच किया। नाचने के बाद वह अपने पिता के पास जा कर खड़ी हो गयी। वहाँ जा कर उसने फिर से अपना रूमाल निकाला तो पैसों से भरा हुआ एक सुँघनी का सोने का डिब्बा[24] नीचे गिर पड़ा।

उसका पिता बोला — "मैम, आपका यह सुँघनी का डिब्बा गिर पड़ा।"

सिन्डरैला बोली — "इसे आप अपने पास रख लें।"

अब ज़रा उस आदमी के बारे में सोचो जिसको यह डिब्बा मिला। उसने उस डिब्बे को खोला तो वह तो पैसों से भरा हुआ था।

वह वहाँ कुछ देर तक खड़ी रही फिर वहाँ से घर चली गयी। राजा के नौकरों ने जल्दी ही उसका अपने घोड़ों पर पीछा किया। इस तरह उसका पीछा करने मे उनको कुछ खास परेशानी नहीं हो रही थी।

सिन्डरैला ने देखा कि आज भी लोग उसके पीछे पीछे आ रहे हैं पर आज उसके पास पीछे फेंकने के लिये कुछ भी नहीं था। वह बोली — "ओह अब मैं क्या करूँ।"

वह अपनी गाड़ी छोड़ कर नीचे उतर गयी और जल्दी जल्दी अपने घर की तरफ भागने लगी। इस जल्दी में उसका एक जूता

[24] Translated for the words "Golden Snuffbox"

निकल गया और नीचे गिर पड़ा। नौकरों ने वह जूता उठा लिया और उसके घर का नम्बर देख कर वापस आ गये।

सिन्डरैला झट से ऊपर गयी और अपनी चिड़िया से बोली — "ओ मेरी छोटी वरडैलियो चिड़िया, मुझे पहले जैसा बना दो।" पर चिड़िया ने उसको इसका कोई जवाब नहीं दिया।

सिन्डरैला ने जब यह तीन चार बार दोहराया तो वह बोली — "मुझे तुमको इस समय घरेलू लड़की तो नहीं बनाना चाहिये पर अगर तुम कहती हो तो...।" और वह फिर से पुरानी सिन्डरैला बन गयी।

चिड़िया फिर बोली — "पर अब तुम क्या करोगी अब तो तुम पहचान ली गयी हो।" यह सुन कर सिन्डरैला रोने लगी।

जब उसकी बहिनें घर वापस लौटीं तो वे वहीं से चिल्लायीं — "सिन्डरैला।"

तुम सोच सकते हो कि उस शाम सिन्डरैला ने उनकी पुकार का उनको कोई जवाब नहीं दिया।

उसकी बहिनें फिर बोलीं — "सिन्डरैला, देख न कितना सुन्दर सुँघनी का डिब्बा है। अगर आज तू गयी होती तो यह डिब्बा तुझको मिल जाता।"

"मुझे चिन्ता नहीं है। मुझे वह चाहिये भी नहीं। चली जाओ यहाँ से।"

तभी उनके पिता ने उनको खाने के लिये आवाज लगायी।

उधर राजा के नौकर उस लड़की का जूता और उसके घर का नम्बर ले कर राजा के पास पहुँचे।

राजा बोला — "कल सुबह जैसे ही दिन निकलता है तुम उस लड़की के घर जाओ और उसको गाड़ी में बिठा कर यहाँ ले आओ।"

नौकरों ने वह जूता उठाया और वहाँ से चले गये। अगली सुबह वे सिन्डरैला के घर पहुँचे और जा कर उसके घर का दरवाजा खटखटाया।

उनके पिता ने बाहर झाँक कर देखा तो बोला — "ओह मेरे भगवान, यह तो मैजेस्टी की गाड़ी है। इसका क्या मतलब है।"

उसने दरवाजा खोला तो राजा के नौकर अन्दर आये। पिता ने पूछा — "तुम लोगों को मुझसे क्या चाहिये?"

"तुम्हारे कितनी बेटियाँ हैं?"

"दो।"

"दिखाओ।"

पिता ने अपनी दोनों बड़ी बेटियों को बुलाया तो राजा के नौकरों ने उनको बैठने के लिये कहा। उन्होंने उनमें से एक के पैर में वह जूता पहना कर देखा तो वह तो उसके पैर से दस गुना बड़ा था।

फिर उन्होंने दूसरी लड़की के पैर में उसको पहना कर देखा तो वह उसके लिये बहुत छोटा था।

उन्होंने उस आदमी से फिर पूछा — "क्या तुम्हारे और कोई बेटी नहीं है? ज़रा सोच समझ कर बोलना क्योंकि मैजेस्टी ऐसा चाहते हैं।"

इस पर वह आदमी बोला — "मेरे एक बेटी और है पर मैं उसको किसी को बताता नहीं हूँ क्योंकि वह हमेशा राख और कोयलों में लिपटी रहती है। अगर तुम उसे देखोगे तब जानोगे कि मैं उसे अपनी बेटी कहते में भी शरमाता हूँ।"

राजा के आदमियों ने कहा — "हम यहाँ उसकी सुन्दरता या उसके बढ़िया पहनावे के लिये नहीं आये हैं। हम तो उस लड़की को केवल यह जूता पहना कर देखना चाहते है।"

इस पर उसकी बहिनों ने उसको पुकारना शुरू किया — "सिन्डरैला। नीचे आ।" पर उसने कोई जवाब ही नहीं दिया।

कुछ देर बाद वह बोली — "क्या बात है?"

"तू नीचे आ। कुछ लोग तुझसे मिलने आये हैं।"

"मुझे नहीं आना।"

"पर तू आ तो सही।"

"ठीक है मैं आती हूँ। उनको कहो कि मैं अभी आती हूँ।"

वह अपनी छोटी चिड़िया के पास गयी और उससे बोली — "ओ मेरी छोटी चिड़िया वरडैलियो, मुझे बहुत सुन्दर बना दो।"

चिड़िया ने उसको पिछली शाम की तरह से सजा दिया – सूरज चॉद और सितारों के साथ। इसके साथ ही उसने उसके चारों तरफ सोने की जंजीरें भी लगा दीं।

यह करके चिड़िया बोली — "सिन्डरैला, मुझे भी अपने साथ ले चलो। मुझे अपनी गोद में रख लो।"

सिन्डरैला ने उसको उठा कर अपनी छाती से लगा लिया और घर की सीढ़ियॉ उतरने लगी।

पिता ने राजा के आदमियों से कहा — "क्या तुमको कुछ सुनायी दे रहा है? देखो न वह अपने साथ चिमनी के कोने से जंजीरें घसीटती ला रही है। अब तुम सोच सकते हो कि वह कितनी डरावनी लग रही होगी।"

पर जब वह सीढ़ियों की आखिरी सीढ़ी पर आयी तब उसको सबने देखा कि वह कितनी सुन्दर लग रही थी। राजा के नौकरों ने उसको देखा तो उन्होंने उसको तुरन्त ही पहचान लिया कि यह तो वही लड़की थी जो राजा के महल में नाच में आयी थी।

तुम सोच सकते हो कि उसके पिता और उसकी बहिनों को कितनी शरमिन्दगी उठानी पड़ी होगी। उन लोगों ने उसको बिठाया और उसको वह जूता पहना कर देखा तो वह तो उसके पैर में बहुत अच्छी तरह से और आसानी से आ गया।

यह देख कर उन्होंने उसको शाही गाड़ी में बिठाया और राजा के पास ले गये।

राजकुमार ने भी उसको पहचान लिया कि यह वही लड़की थी जो उसके नाच में आयी थी। वह उसके सामने घुटनों पर बैठ गया और उससे पूछा — "मुझसे शादी करोगी?"

अब तुम बस यह केवल सोच ही सकते हो कि उसने हॉ कर दी होगी। उसने फिर अपने पिता और बहिनों को बुलाया और उसकी और राजा की शादी बड़ी धूमधाम से हुई।

जिन नौकरों ने यह पता लगाया था कि सिन्डरैला कहॉ रहती है उनकी इनाम के तौर पर महल में तरक्की कर दी गयी।

6 सिन्डरैला–2[25]

मैं तुम्हारे लिये क्या लाऊँ की यह कहानी बहुत पुरानी है, 18वीं सदी की। यह कहानी यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश में कही सुनी जाती है।

एक बार एक अमीर आदमी की पत्नी बहुत बीमार पड़ गयी और इतनी बीमार पड़ी कि उसके जीने की कोई उम्मीद ही नहीं रही। उनकी एक बेटी थी।

मरते समय पत्नी ने अपनी बेटी को बुलाया और उससे कहा — "बेटी, देखो सबके साथ हमेशा भली रहना। हमारे भगवान तुम्हारी हमेशा रक्षा करेंगे। मैं तुमको हमेशा ही ऊपर स्वर्ग से देखती रहूँगी और हमेशा तुम्हारे पास ही रहूँगी।"

यह कह कर उसने अपनी ऑखें बन्द कर लीं और वह मर गयी। बच्ची रोज अपनी मॉ की कब्र पर जाया करती थी और वहॉ जा कर रोती रहती थी। वह अपनी मॉ के कहे अनुसार सबके साथ भले ढंग से रहती थी।

---

[25] Cinderella – a fairy tale from Germany, Europe. By Jacob and Wilhelm Grimms, in "Children's and Household Tales", 7th ed. 1857. Translated by DL Ashliman.
1857 edition was the last edition of this tale.
The Grimms Brothers took this story from the stories written by Dorothea Viehmann (1755-1815), and other sources. This story can be read in English at the Web Site :
http://www.pitt.edu/~dash/grimm021.html

जब जाड़ा आया तो बरफ पड़ी और उसकी मॉ की कब्र बरफ से ढक गयी। उसके बाद वसन्त आया तो वह बरफ पिघल गयी और उस बच्ची के पिता ने दूसरी शादी कर ली।

उसकी सौतेली मॉ अपने साथ अपनी दो बेटियों को भी ले कर आयी थी।

उसकी अपनी दोनों बेटियॉ बहुत सुन्दर थीं। उनका रंग गोरा था पर उनके दिल बुरे और काले थे। उन सबके आने के बाद जल्दी ही उस बच्ची के लिये समय बुरा समय आ गया।

वे लड़कियॉ कहतीं रहतीं — "यह बेवकूफ बरामदे में हमारे साथ क्यों बैठती है?" "अगर उसको रोटी खानी है तो उसको कमाना भी होगा।" "इस घर में काम करने वाली को हमसे दूर रखो।" आदि आदि।

सिन्डरैला के अच्छे कपड़े उससे छीन लिये गये और पहनने के लिये उसको भूरे रंग की एक पुरानी पोशाक और लकड़ी के जूते दे दिये गये।

फिर उसकी सौतेली मॉ की वे लड़कियॉ उसका मजाक बनाती हुई और उसको रसोईघर में ले जाती हुई कहती — "देखो तो यह कितनी सजी हुई लग रही है।"

वहॉ उसको सुबह से शाम तक सारा दिन बहुत सारा काम करना पड़ता। वह सुबह सवेरे दिन निकलने से भी पहले उठती। घर के

लिये पानी लाती, आग जलाती, फिर घर भर के लिये खाना पकाती और बरतन साफ करती। घर की सफाई भी वही करती।

इसके अलावा उसकी बहिनें उसको तंग करने के लिये जो कुछ भी वे कर सकती थीं करतीं। वे उसका मजाक बनातीं। मटर और मसूर के दाने राख में बिखेर देतीं ताकि वह उनको बैठ कर फिर से चुन कर अलग कर सके।

शाम को जब वह काम करके थक जाती तब उसको सोने के लिये कोई पलंग भी नहीं मिलता। उसको अंगीठी के पास पड़ी राख के पास ही सोना पड़ता। और क्योंकि वह हमेशा धूल से भरी और मैली दिखायी देती सो सब उसको सिन्डरैला कहने लगे।

एक बार उसका पिता बाहर किसी मेले में जा रहा था। उसने उसकी दोनों सौतेली बहिनों से पूछा कि वह उनके लिये वहाँ से क्या लेकर आये।

एक ने कहा — "सुन्दर पोशाकें।"

दूसरी ने कहा — "मोती और जवाहरात।"

"और तुम सिन्डरैला? तुमको क्या चाहिये?"

सिन्डरैला बोली — "पिता जी मेरे लिये तो जब आप घर लौट रहे हों तो किसी भी पेड़ की कोई भी छोटी सी शाख जो सबसे पहले आपके टोप से टकराये बस वही ले आना।"

सो जब वह उस मेले से लौटा तो अपनी दोनों बेटियों के लिये सुन्दर पोशाकें, मोती और जवाहरात लाया। जब वह वापस आ रहा था तो जंगल में एक हैज़ल नट[26] के पेड़ की डंडी उसके टोप से टकरा गयी।

उसको सिन्डरैला का ध्यान आया कि उसने उस पेड़ की एक शाख मॅगवायी थी जिसकी शाख उसके टोप से सबसे पहले टकरा जाये और उसने उस पेड़ की वह डंडी तोड़ ली और उसके लिये ले आया। घर आ कर उसने जिस जिसके लिये जो जो चीज़ ले कर आया था वह वह उसको दे दी।

सिन्डरैला ने अपने पिता को धन्यवाद दिया और उस डंडी को ले कर अपनी मॉ की कब्र पर गयी और वहॉ जा कर उसने उस डंडी को उसकी कब पर लगा दिया। दिनों दिन वह डंडी बढ़ने लगी।

सिन्डरैला वहॉ दिन में तीन बार जाती थी और उस शाख के पास बैठ कर रोती रहती और भगवान से प्रार्थना करती रहती।

जब भी वह वहॉ होती तो हर बार वहॉ एक सफेद चिड़िया आती और अगर वह कोई अपनी इच्छा बोलती तो वह चिड़िया उस चीज़ को नीचे फेंक देती जो वह चाहती और इस तरह वह उसकी इच्छा पूरी कर देती।

[26] Hazel Nut – is a nut – see its picture above

अब एक दिन ऐसा हुआ कि वहाँ के राजा ने यह मुनादी पिटवायी कि उसके किले में एक उत्सव मनाया जायेगा जो तीन दिन तक चलेगा। देश की सारी सुन्दर लड़कियों को उस उत्सव में हिस्सा लेने के लिये बुलाया गया।

यह उत्सव इसलिये मनाया जा रहा था ताकि राजा का बेटा अपने लिये दुलहिन चुन सके। सिन्डरैला की सौतेली बहिनों ने जब यह सुना कि उनको भी उस उत्सव में बुलाया गया है तो वे बहुत खुश हुईं।

उन्होंने सिन्डरैला को बुलाया और कहा — "तुम हमारे बालों में कंघी करो, हमारे जूते पालिश करो और हमारी पोशाक के बटन लगाओ। हम राजा के किले में होने वाले उत्सव में जा रहे हैं।"

सिन्डरैला ने उनका कहना मान तो लिया पर उसको रोना भी आ गया क्योंकि वह भी उनके साथ उस नाच में जाना चाहती थी। उसने अपनी सौतेली माँ से बहुत प्रार्थना की कि वह उसको भी उनके साथ जाने दे।

माँ ने उसको झिड़का — "तुम सिन्डरैला तुम? तुम धूल से भरी और गन्दी? और तुम उस उत्सव में जाना चाहती हो? नहीं नहीं तुम वहाँ नहीं जा सकतीं।"

सिन्डरैला बेचारी अपनी माँ से जिद करती रही तो आखिर माँ ने कहा — "मैंने मसूर राख में बिखेर दी है अगर तुम उसको दो घंटे में चुन लो तो तुम हमारे साथ जा सकती हो।"

सिन्डरैला अपने घर के पीछे के दरवाजे से निकल कर बाहर बागीचे में पहुँची और बोली — "ओ मेरे पालतू कबूतरों, फाख्ताओं और आसमान के नीचे उड़ने वाली सारी चिड़ियों, आओ और मेरी सहायता करो।"

"अच्छी अच्छी बरतन में जाओ, और खराब वाली खेत में जाओ।"

तभी दो सफेद कबूतर रसोईघर की खिड़की से अन्दर रसोईघर में आये। उनके बाद फाख्ताऐं और फिर बहुत सारी चिड़ियाँ वहाँ पड़ी राख के चारों तरफ इकट्ठा हो गयीं। उन सबने मिल कर मसूर के सब अच्छे दाने राख में से बीन कर बरतन में डाल दिये।

एक घंटे से पहले पहले ही उन्होंने अपना काम खत्म कर दिया। काम खत्म करने के बाद वे सब चिड़ियें वहाँ से उड़ कर बाहर चली गयीं।

सिन्डरैला वह बरतन उठा कर अपनी सौतेली माँ के पास यह सोचते हुए ले गयी कि शायद अब उसकी माँ उसको जाने देगी।

पर उसकी माँ ने कहा — "नहीं सिन्डरैला नहीं। तुम्हारे पास तो वहाँ जाने के लायक ठीक से कपड़े भी नहीं हैं और फिर तुमको नाचना भी तो नहीं आता। वहाँ हर कोई तुम पर हँसेगा। नहीं नहीं तुम वहाँ नहीं जा सकतीं।"

यह सुन कर सिन्डरैला रोने लगी। यह देख कर उसकी माँ यह सोच कर कि वह यह काम तो कभी पूरा नहीं कर पायेगी बोली —

"ठीक है तुम वहॉ जा सकती हो अगर तुम एक घंटे में राख में से दो बरतन मसूर चुन दोगी तो।"

यह सुन कर सिन्डरैला जाने की खुशी में फिर से बाहर बागीचे में भागी गयी और पहले की तरह से चिड़ियों को बुलाया — "ओ मेरे पालतू कबूतरों, फाख्ताओ और आसमान के नीचे उड़ने वाली सारी चिड़ियों, आओ और मेरी सहायता करो।"

"अच्छी अच्छी बरतन में जाओ, और खराब वाली खेत में जाओ।"

तभी दो सफेद कबूतर फिर रसोईघर की खिड़की से अन्दर रसोईघर में आये और उनके बाद फाख्ताऐं और फिर बहुत सारी चिड़ियॉ वहॉ पड़ी राख के चारों तरफ इकट्ठा हो गयीं। उन सबने मिल कर फिर से मसूर के सब अच्छे दाने बरतन में डाल दिये।

एक घंटे से पहले ही उन्होंने अपना काम खत्म कर दिया। काम खत्म करने के बाद वे सब चिड़ियें वहॉ से उड़ कर बाहर चली गयीं।

वह लड़की बेचारी यह सोचते हुए खुशी खुशी फिर से वे बरतन अपनी मॉ के पास ले कर गयी कि शायद अब उसकी मॉ उसको उत्सव में जाने की इजाज़त दे देगी।

पर उसकी सौतेली मॉ ने कहा — "नहीं नहीं, इस सबसे कोई फायदा नहीं। तुम हमारे साथ नहीं चल रही हो। क्योंकि तुम्हारे पास तो वहॉ पहनने के लायक कपड़े ही नहीं हैं और तुमको नाचना भी

नहीं आता। अगर तुम जाओगी तो तुम्हारी वजह से हमें बड़ी शरमिन्दगी उठानी पड़ेगी।"

यह कह कर उसने सिन्डरैला की तरफ से मुँह फेरा और अपनी दोनों बेटियों को ले कर राजा के यहाँ उत्सव में चली गयी।

अब घर पर सिन्डरैला अकेली थी सो वह अपनी माँ की कब्र पर गयी और हैज़ल नट के पेड़ के नीचे बैठ कर रोने लगी। वह बोली —

ओ पेड़ तुम हिलो और मुझे सोना और चाँदी नीचे फेंको

तभी वहाँ पर वह सफेद चिड़िया आयी और उसने एक सुनहरी और रुपहली पोशाक नीचे फेंक दी। वह एक जोड़ी जूते भी लायी थी जो चाँदी के तारों और रेशम से कढ़े हुए थे। सिन्डरैला ने वह पोशाक और जूते उठाये और उनको पहन कर राजा के यहाँ उत्सव में चली गयी।

उसकी सौतेली माँ और बहिनों ने उसको पहचाना नहीं। उन्होंने सोचा कि यह लड़की शायद किसी दूसरे देश की राजकुमारी है क्योंकि वह उस सुनहरी पोशाक में बहुत सुन्दर लग रही थी। उनके दिमाग में यह एक बार भी नहीं आया कि वह सिन्डरैला हो सकती है।

वे तो बस यही सोच रही थीं कि सिन्डरैला तो घर में अपनी मैली कुचैली पोशाक पहने राख में से मसूर के दाने ढूँढ रही होगी।

राजकुमार उसके पास आया और उसका हाथ पकड़ कर ले गया और उसके साथ नाचना शुरू कर दिया। और जब उसके साथ उसने नाचना शुरू किया तो वह फिर किसी और के साथ नाचने के लिये तैयार ही नहीं हुआ।

उसने फिर उसका हाथ ही नहीं छोड़ा। अगर कोई दूसरा उस के संग नाचने के लिये आया भी तो उसने उसको यही कहा कि "आज यही मेरे नाच की साथी है।"

वे दोनों रात गये तक नाचते रहे। जब काफी रात हो गयी तो लड़की बोली कि अब वह घर जाना चाहती है।

राजकुमार बोला — "चलो मैं तुम्हारे साथ चल कर तुमको तुम्हारे घर छोड़ आता हूँ।" असल में वह यह जानना चाहता था कि वह कहाँ रहती है और किसकी बेटी है।

पर सिन्डरैला उसको धोखा दे कर पास में बने कबूतर के घर में कूद पड़ी। राजकुमार वहाँ तब तक इन्तजार करता रहा जब तक उस लड़की का पिता उसको ढूँढता हुआ वहाँ आया।

वह तो उस लड़की को ढूँढने में राजकुमार की सहायता करने आया था। जब वह वहाँ आया तो राजकुमार ने उसको बताया कि एक अनजानी लड़की कबूतर के घर में कूद तो गयी है पर उसके बाद से उसका पता नहीं है।

उस आदमी ने सोचा "क्या वह सिन्डरैला हो सकती है?"

उसने राजकुमार से एक कुल्हाड़ी मँगवायी ताकि वह उस कबूतर के घर को तोड़ सके। कुल्हाड़ी आ गयी और उसने कबूतर का घर तोड़ भी दिया पर वहाँ तो कोई भी नहीं था।

जब वे सब घर लौटे तो उन्होंने देखा कि सिन्डरैला तो रसोईघर में अपने मैले कुचैले कपड़े पहन कर आग के पास राख में पड़ी है और अंगीठी पर रखा एक बहुत ही धीमा सा लैम्प जल रहा है।

असल में सिन्डरैला जैसे ही कबूतर के घर पर कूदी थी वैसे ही वह वहाँ से अपने हैज़ल नट के पेड़ की तरफ भाग गयी। वहाँ पहुँच कर उसने अपने बढ़िया वाले कपड़े उतारे और कब्र पर रख दिये।

वे अच्छे कपड़े वह चिड़िया वहाँ से उठा कर ले गयी और सिन्डरैला अपने पुराने वाले कपड़े पहन कर घर चली आयी।

अगले दिन राजमहल में उत्सव फिर से शुरू हुआ। उसके माता पिता और उसकी सौतेली बहिनें फिर से वहाँ गयीं तो सिन्डरैला फिर से अपने हैज़ल नट के पेड़ के पास पहुँच गयी और बोली —

ओ पेड़ हिलो, और मुझे सोना और चाँदी नीचे फेंको

तभी वहाँ पर वह सफेद चिड़िया फिर से आयी और उसने पिछले दिन से भी सुन्दर एक और पोशाक नीचे फेंक दी। सिन्डरैला ने तुरन्त वह पोशाक पहनी और उत्सव में भाग गयी।

जैसे ही लोगों ने सिन्डरैला को उस सुन्दर पोशाक में देखा तो सब उसकी सुन्दरता की तारीफ करने लगे। राजकुमार भी बस जैसे उसके आने का इन्तजार ही कर रहा था। उसके आते ही उसने सिन्डरैला का हाथ पकड़ा और उसके साथ नाचना शुरू कर दिया।

उस रात भी उसने फिर उसका हाथ ही नहीं छोड़ा। अगर कोई दूसरा उसके संग नाचने के लिये आया भी तो उसने उसको यही कहा कि "आज यही मेरे नाच की साथी है।"

जब रात हो आयी तो सिन्डरैला ने कहा कि वह अब घर जाना चाहती है। राजकुमार यह देखने के लिये फिर उसके पीछे पीछे चला कि वह किस घर में जाती है। पर वह जल्दी से वहाँ से घर के पीछे वाले बागीचे में भाग गयी।

बगीचे में नाशपाती का एक ऊँचा सा पेड़ खड़ा था जिस पर बहुत ही सुन्दर नाशपाती लगी हुई थीं। सिन्डरैला उस पेड़ पर एक गिलहरी की तरह से चढ़ गयी और उस पेड़ की शाखों में छिप गयी।

राजकुमार को पता भी नहीं चला कि वह लड़की कहाँ गयी। सिन्डरैला का पिता एक बार फिर राजकुमार की सहायता के लिये आया और जब वह वहाँ आया तो राजकुमार ने उससे कहा "इस बार भी वह हमको धोखा दे गयी। पर मुझे लगता है कि वह इस नाशपाती के पेड़ पर चढ़ गयी है।"

पिता ने फिर सोचा "क्या यह सिन्डरैला हो सकती है?"

अबकी बार वह कुल्हाड़ी अपने साथ लाया था सो उसने उस कुल्हाड़ी से वह पेड़ काट डाला पर वहाँ तो कोई भी नहीं था।

जब वे सब घर लौट कर आये तो सबने फिर देखा कि सिन्डरैला वहीं रसोई घर में अपने मैले कुचैले कपड़े पहन कर राख में पड़ी है और एक बहुत ही धीमा सा लैम्प अंगीठी पर जल रहा है।

क्योंकि जैसे ही सिन्डरैला पेड़ पर चढ़ी थी वह तुरन्त ही पेड़ के दूसरी तरफ नीचे उतर गयी। दौड़ी दौड़ी वह फिर अपनी माँ की कब्र पर गयी, चिड़िया को अच्छी वाली पोशाक वापस की और अपनी पुरानी पोशाक पहन कर घर वापस आ कर अपनी जगह लेट गयी।

तीसरे दिन फिर जब उसके माता पिता और बहिनें उस उत्सव में चले गये तो तो सिन्डरैला फिर से अपने हैज़ल नट के पेड़ के पास पहुँच गयी और बोली —

ओ पेड़ हिलो, और मुझे सोना और चाँदी नीचे फेंको

तभी वह सफेद चिड़िया वहाँ पर फिर से आयी और उसने पिछले दो दिनों से भी ज़्यादा सुन्दर एक पोशाक नीचे फेंक दी। अबकी बार वह जो जूते ले कर आयी थी वे खालिस सोने के थे। सिन्डरैला ने तुरन्त वह पोशाक और जूते पहने और उत्सव में भाग लेने के लिये भाग गयी।

जब रात होने लगी तो सिन्डरैला फिर से अपने घर जाना चाहती थी तो राजकुमार ने फिर से उसके साथ जाना चाहा पर वह वहॉ से फिर से इतनी तेज़ी से भाग गयी कि राजकुमार उसका पीछा ही नहीं कर सका।

पर राजकुमार ने अबकी बार उसको पकड़ने के लिये एक जाल बिछा रखा था। उसने अपनी सीढ़ियों पर गोंद लगा दिया था ताकि जब वह लड़की वहॉ से भागे तो वह वहीं की वहीं चिपक जाये सो जब सिन्डरैला वहॉ से भागी तो उसके बॉये पैर का जूता उस गोंद से चिपक गया।

वह अपना जूता उस गोंद से छुड़ा ही नहीं सकी सो उसको अपना वह जूता वहीं छोड़ना पड़ा और केवल एक ही जूता पहन कर वहॉ से भाग जाना पड़ा।

राजकुमार ने उसका वह चिपका हुआ जूता उठा लिया। वह जूता छोटा था, सुन्दर था और खालिस सोने का बना था।

अगले दिन वह उस आदमी के पास गया जो उस लड़की ढूँढने में उसकी सहायता करने आया था और उसको वह जूता दिखा कर बोला — "जिस लड़की के पैर में यह जूता आ जायेगा वही लड़की मेरी पत्नी बनेगी।"

सिन्डरैला की दोनों सौतेली बहिनें यह सुन कर बहुत खुश हुईं क्योंकि उनके पैर बहुत सुन्दर थे।

बड़ी बेटी उस जूते को अपने सोने वाले कमरे में ले गयी और उसमें अपना पैर घुसाने की कोशिश करने लगी तो उसमें तो उसके पैर का अँगूठा भी नहीं घुसा।

जब वह जूता पहनने की कोशिश कर रही थी तो उसकी माँ भी उसके पास ही खड़ी थी। उसने देखा कि वह जूता तो उसके लिये बहुत ही छोटा था।

यह देख कर माँ ने एक चाकू निकाल कर उसको देते हुए कहा — "लो यह चाकू लो और अपना अँगूठा काट दो क्योंकि जब तुम रानी बन जाओगी तब तुमको पैदल चलने की तो जरूरत ही नहीं पड़ेगी।"

माँ की बात मान कर लड़की ने अपना अँगूठा काट दिया और दर्द सहते हुए अपने पैर को उस जूते में ठूँस दिया। जूता पहन कर वह राजकुमार को दिखाने के लिये उसके पास गयी।

राजकुमार ने देखा कि जूता उसके पैर में आ गया था सो उसने उस लड़की को अपने घोड़े पर बिठाया और अपने महल ले चला।

जाते समय उनको सिन्डरैला की माँ की कब्र के पास से गुजरना पड़ा। उस कब्र के पास लगे हैज़ल नट के पेड़ के ऊपर दो कबूतर बैठे थे वे चिल्लाये —

गुटर गूँ गुटर गूँ, जूते में खून है
जूता बहुत कसा हुआ है, यह दुलहिन ठीक नहीं है

यह सुन कर राजकुमार ने उस लड़की का पैर देखा तो देखा कि सचमुच ही उस लड़की के पैर से तो खून निकल रहा था। उसने अपना घोड़ा मोड़ लिया और उसको यह कह कर उसके घर छोड़ दिया कि वह उसके लायक दुलहिन नहीं थी।

तब उसने दूसरी बहिन को वह जूता पहन कर देखने के लिये कहा। वह भी उस जूते को अपने सोने वाले कमरे में ले गयी और उसको पहनने की कोशिश करने लगी पर उसकी एड़ी बहुत बड़ी थी सो वह भी उसको नहीं पहन सकी।

यह देख कर उसकी माँ ने उसको भी एक चाकू दिया और उससे अपनी एड़ी काटने के लिये कहा कि रानी बनने के बाद तो उसको पैदल चलने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

लड़की ने अपनी एड़ी का एक छोटा सा टुकड़ा काट दिया और किसी तरह से अपना पैर उस जूते के अन्दर घुसा दिया।

जब वह बाहर राजकुमार को जूता दिखाने आयी तो राजकुमार ने देखा कि उसके पैर में तो वह जूता आ गया है तो उसने उसको अपने घोड़े पर बिठाया और अपने महल ले चला।

वह फिर से सिन्डरैला की माँ की कब्र के पास से गुजरा तो हैज़ल नट के पेड़ पर बैठे दो कबूतर फिर चिल्लाये —

गुटर गूँ गुटर गूँ, जूते में खून है
जूता बहुत कसा हुआ है, यह दुलहिन ठीक नहीं है

यह सुन कर राजकुमार ने उस लड़की का पैर देखा तो देखा कि सचमुच ही उसके पैर से खून निकल रहा था। उस खून से उसका सफेद मोजा लाल हो गया था।

राजकुमार ने अपना घोड़ा फिर मोड़ लिया और उस लड़की को यह कह कर उसके घर छोड़ दिया कि वह उसके लायक दुलहिन नहीं थी।

फिर उसने उनके पिता से पूछा — "क्या आपके कोई और बेटी भी है?"

उनका पिता बोला — "नहीं। पर हॉ एक लड़की है जो मेरी पहली पत्नी से है पर वह तुम्हारी पत्नी बनने के लायक नहीं है।"

राजकुमार ने उससे कहा कि वह उसको वहॉ बुला दे।

पर मॉ बोली — "पर वह तो बहुत गन्दी है। उसको तो तुम देखना भी पसन्द नहीं करोगे।"

पर राजकुमार ने जिद की कि उनको उस लड़की को बुलाना ही होगा। सो उनको सिन्डरैला को बुलाना ही पड़ा। सिन्डरैला ने अपने हाथ और चेहरा धो कर साफ किया। फिर राजकुमार के सामने जा कर सिर झुका कर खड़ी हो गयी।

राजकुमार ने उसको वह सोने का जूता पहनने के लिये दिया। वह एक नीचे स्टूल पर बैठ गयी और अपना बॉया पैर अपने भारी लकड़ी के जूते से बाहर निकाला। फिर उसने वह सोने का जूता पहना तो वह तो उसके पैर में बिल्कुल ठीक आ गया।

जब वह जूता पहन कर खड़ी हुई तो राजकुमार ने उसके चेहरे की तरफ देखा तो उसको पहचान लिया कि यह तो वही लड़की थी जिसके साथ उसने नाच किया था।

उसकी सौतेली मॉ और सौतेली बहिनें यह देख कर डर गयीं और गुस्से से लाल पीली हो गयीं। पर राजकुमार ने सिन्डरैला को अपने घोड़े पर बिठाया और अपने महल ले चला।

जब वह हैज़ल नट के पेड़ के पास से गुजरा तो उस पेड़ पर बैठे दोनों सफेद कबूतर चिल्लाये —

गुटर गूँ गुटर गूँ, जूते में कोई खून नहीं है
जूता भी बहुत कसा हुआ नहीं है, और दुलहिन भी ठीक है।

यह कह कर वे उड़े और सिन्डरैला के दोनों कन्धों पर जा कर बैठ गये – एक बॉये कन्धे पर और दूसरा दॉये कन्धे पर और तब तक वहीं बैठे रहे जब तक वह राजमहल पहुँची।

जब राजकुमार की शादी सिन्डरैला से हुई तो उसकी दोनों सौतेली बहिनें भी आयीं ताकि वे सिन्डरैला से उसकी कुछ दया ले सकें और उससे कुछ पैसे ले सकें।

जब राजकुमार और सिन्डरैला शादी के लिये चर्च में अन्दर गये तो उसकी बड़ी बहिन उसके दॉयी तरफ चली और उसकी छोटी बहिन उसके बॉयी तरफ चली। तो सिन्डरैला के कन्धों पर बैठे दोनों कबूतरों ने उन दोनों बहिनों की एक एक ऑख निकाल ली।

बाद में जब वे चर्च से बाहर आये तब बड़ी वाली बहिन सिन्डरैला के बॉयी तरफ थी और छोटी वाली बहिन दॉयी तरफ। कबूतरों ने उस समय भी उन दोनों बहिनों की एक एक ऑख निकाल ली।

इस तरह उन दोनों नीच बहिनों को अपने किये का फल मिला और वे सारी ज़िन्दगी अन्धी ही रहीं।

7 हरा नाइट[27]

मैं तुम्हारे लिये क्या लाऊँ की यह कहानी यूरोप के डेनमार्क देश में कही सुनी जाती है। डेनमार्क देश यूरोप महाद्वीप के नौरडिक या नोर्स या स्कैन्डिनेवियन देशों में आता है। नोर्स देशों में पॉच देश हैं जो उसके सुदूर उत्तर में स्थित हैं – फिनलैंड, स्वीडन, नौर्वे, आइसलैंड और डेनमार्क।

एक बार की बात है कि डेनमार्क में एक राजा और रानी अपनी बेटी के साथ रहते थे। उनकी बेटी अभी छोटी ही थी कि रानी बहुत बीमार पड़ गयी और उसी बीमारी में वह चल बसी।

जब रानी को यह पता चला कि अब वह ज़्यादा दिन ज़िन्दा नहीं रहने वाली तो उसने राजा को बुलाया और उससे कहा — "प्रिये, ताकि मैं शान्ति से मर सकूँ इसके लिये तुम मुझसे एक वायदा करो। कि मेरी बेटी जो कुछ भी मॉगेगी अगर वह तुम उसको दे सकते होगे तो वह चीज़ उसको जरूर दोगे। किसी चीज़ के लिये मना नहीं करोगे।"

इस वायदे के लेने के कुछ समय बाद ही रानी चल बसी। रानी के जाने के बाद राजा का दिल टूट गया क्योंकि वह अपनी रानी को

---

[27] The Green Knight – a fairy tale from Denmark, Europe.
This story taken from http://www.pitt.edu/~dash/greenknight.html
--edited by DL Ashliman.
--DL Ashliman took it from, Danish Fairy Tales, by Svendt Grundtvig, translated by J Grant Cramer. Boston, Richard G Badger. 1912. pp. 22-37.

बहुत प्यार करता था। वह अपनी बेटी को भी बहुत प्यार करता था सो वह केवल अपनी बेटी को देख कर ही ज़िन्दा था।

राजकुमारी अपनी मॉ के लिये हुए वायदे के साथ बड़ी होने लगी। राजा के लिये बेटी की मॉ के साथ किये हुए वायदे को निभाना कोई मुश्किल काम नहीं था।

पर इस वायदे को निभाने ने उसकी बेटी को थोड़ा बिगाड़ दिया था नहीं तो वह एक बहुत अच्छी बच्ची थी जिसको एक मॉ की जरूरत थी जो उसको प्यार कर सके। इस प्यार की कमी की वजह से वह कभी कभी उदास हो जाती और कभी बेकार में ही गुस्सा भी हो जाती।

उसको दूसरे बच्चों की तरह से खेलना अच्छा नहीं लगता बल्कि वह अकेली बागीचों और जंगलों में घूमती रहती। उसको फूलों और चिड़ियों से बहुत प्यार था और उसको कहानियॉ और कविताऐं पढ़ने का भी बहुत शौक था।

महल के पास ही एक काउन्ट[28] की पत्नी रहती थी। काउन्ट तो मर गया था पर उसके एक बेटी थी जो राजकुमारी से थोड़ी सी बड़ी थी। वह अब उसी के साथ रहती थी।

काउन्टैस की वह नौजवान बेटी कोई बहुत अच्छी लड़की नहीं थी। वह एक बहुत ही बेकार, स्वार्थी और बहुत ही पत्थर दिल

[28] Count - Count (male) or countess (female) is a title in European countries for a noble of varying status, but historically deemed to convey an approximate rank intermediate between the highest and lowest titles of nobility.

लड़की थी। पर अपनी मॉ की तरह वह चतुर बहुत थी और जब भी वह देखती कि कहीं उसका कोई काम बनने वाला है तो वह अपने विचारों को छिपा भी लेती थी।

बड़ी काउन्टैस ने ऐसे ऐसे तरीके निकाल रखे थे जिससे कि उसकी अपनी बेटी राजकुमारी के साथ ही रहे इसलिये मॉ और बेटी दोनों ही राजकुमारी को खुश रखने में लगी रहतीं।

उन दोनों के बस में जो कुछ भी होता वे उसको खुश रखने के लिये उसके लिये किसी भी तकलीफ को उठा कर करतीं। उसकी परेशानी को दूर करने के लिये उन दोनों में से जल्दी ही उसके पास कोई न कोई पहुँच जाता।

बड़ी काउन्टैस तो यही चाहती थी और इसके लिये वह मेहनत भी बहुत कर रही थी ताकि समय आने पर वह अपनी बात पर आ सके।

सो जब वह समय आ गया तो एक दिन बड़ी काउन्टैस ने अपनी बेटी से राजकुमारी से रोते हुए यह कहने के लिये कहा कि अब वे दोनों अलग हो जायेंगी क्योंकि वह अपनी मॉ के साथ किसी दूसरे देश जा रही है।

यह सुनते ही छोटी राजकुमारी बड़ी काउन्टैस के पास भागी गयी और बोली कि उसको अपनी बेटी को साथ ले कर वहॉ से नहीं जाना चाहिये।

छोटी राजकुमारी की बात सुन कर काउन्टैस ने उसके साथ बहुत सहानुभूति का बहाना किया और उससे कहा कि उसके वहाँ उस देश में रुकने का अब केवल एक ही तरीका है और वह यह कि राजा उससे शादी कर ले। उसके बाद दोनों माँ बेटी उसके पास हमेशा के लिये रह सकती थीं।

फिर उन्होंने उसको सब्ज़ बाग दिखाये कि जब वे वहाँ रहेंगी तो वे उसी की हो कर रहेंगी।

यह सुन कर राजकुमारी अपने पिता के पास गयी और उनसे उसने बड़ी काउन्टैस से शादी करने की प्रार्थना की। क्योंकि अगर उसने उससे शादी नहीं की तो वह अपनी बेटी के साथ चली जायेगी और उसकी अपनी बेटी की अकेली दोस्त भी चली जायेगी और उस दोस्त के बिना वह तो मर ही जायेगी।

राजा उसको समझाते हुए बोला — "अगर मैंने ऐसा किया तो बेटी यह करके तुम बहुत पछताओगी। और साथ में मैं भी। क्योंकि मेरी शादी करने की कोई इच्छा नहीं है और मुझे उस धोखेबाज काउन्टैस और उसकी धोखेबाज बेटी का कोई भरोसा भी नहीं है।"

पर राजकुमारी का रोना नहीं रुका। वह उससे जिद करती ही रही जब तक कि वह काउन्टैस से शादी करने पर राजी नहीं हो गया और उसने राजकुमारी की इच्छा पूरी नहीं की।

राजा ने काउन्टैस से शादी करने के लिये पूछा तो काउन्टैस तो पहले से ही तैयार बैठी थी वह तुरन्त ही राजी हो गयी। जल्दी ही

उन दोनों की शादी हो गयी। अब काउन्टैस रानी बन गयी और छोटी राजकुमारी की सौतेली माँ बन गयी।

पर जैसे ही काउन्टैस रानी बन कर महल में आयी सब कुछ बदल गया। रानी ने अपनी सौतेली बेटी यानी राजकुमारी को बजाय प्यार से रखने के उसको चिढ़ाना और तंग करना शुरू कर दिया। उसकी ज़िन्दगी दूभर करने के लिये वह जो कुछ कर सकती थी अब वह उसने सब करना शुरू कर दिया था।

राजा ने भी यह सब देखा। वह इस सबसे बहुत दुखी हुआ क्योंकि वह अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था।

एक दिन उसने अपनी बेटी से कहा — "ओह मेरी प्यारी बेटी, तुम्हारी ज़िन्दगी तो बहुत ही खराब हो गयी। तुम भी यह सोच कर पछताती तो होगी कि तुमने मुझसे क्या माँगा। देखो जैसा मैंने तुमसे पहले कहा था वैसा ही हुआ। पर अब तो हम दोनों की बदकिस्मती से बहुत देर हो चुकी है।

मुझे लगता है कि तुमको अब हमको कुछ दिनों के लिये छोड़ देना चाहिये। तुम ऐसा करो कि टापू पर बने मेरे गरमी वाले महल में चली जाओ। वहाँ तुम कम से कम शान्ति से तो रह सकोगी।"

हालाँकि उन दोनों के लिये अलग होना बहुत मुश्किल था फिर भी राजकुमारी पिता की बात मान गयी।

यह बहुत जरूरी भी था क्योंकि वह अपनी नीच सौतेली मॉ और अपनी नीच सौतेली बहिन के बुरे व्यवहार को और ज़्यादा नहीं सह सकती थी।

उसने अपने साथ अपनी दो दासियॉ लीं और अपने पिता के टापू पर बने गरमी वाले महल में रहने चली गयी। उसका पिता कभी कभी उससे मिलने के लिये वहॉ आ जाता था।

वहॉ आ कर वह देखता कि उसकी बेटी सौतेली मॉ के साथ घर में रहने की बजाय इस महल में रह कर ज़्यादा खुश थी।

इस तरह से वह एक बहुत सुन्दर, दयावान, भोलीभाली और दूसरों के बारे में सोचने वाली लड़की की तरह बड़ी होती रही। वह आदमियों और जानवरों सब पर दया करती।

पर वह सचमुच में खुश नहीं थी। वह हमेशा ही उदास रहती। उसके दिल में हमेशा ही यह इच्छा रहती कि उसके पास जो कुछ भी इस समय है उसको इससे कुछ ज़्यादा अच्छा मिल सकता है।

एक दिन उसका पिता उससे विदा लेने के लिये आया क्योंकि उसको किसी लम्बी यात्रा पर जाना था।

वहॉ उसको राजाओं और कुलीन लोगों की एक मीटिंग में हिस्सा लेना था जो कई देशों से आने वाले थे और वह मीटिंग काफी दिनों तक चलने वाली थी सो वह काफी दिनों तक लौटने वाला नहीं था।

राजा अपनी बेटी को खुश करने के लिये बोला कि वहाँ वह उसके लिये अगर कोई अच्छा राजकुमार मिलेगा तो ढूँढेगा जिससे वह उसकी शादी कर सके।

तो राजकुमारी ने जवाब दिया — "पिता जी, इसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद। पर अगर आपको कहीं हरा नाइट[29] मिल जाये तो उसको मेरी तरफ से नमस्ते कहियेगा और उससे कहियेगा कि मैं उसको बहुत चाहती हूँ और उसका इन्तजार कर रही हूँ। क्योंकि केवल वही मुझे मेरे इस दुख से छुटकारा दिला सकता है और दूसरा कोई नहीं।"

जब राजकुमारी ने यह कहा तो वह चर्च के हरे ऑगन के बारे में सोच रही थी जिसमें बहुत सारे हरे हरे मिट्टी के ढेर[30] खड़े हुए थे क्योंकि उस समय वह मौत के बारे में सोच रही थी।

पर राजा यह बात नहीं समझ सका। उसको अपनी बेटी का इस अजीब से नाइट के लिये अजीब सा सन्देश सुन कर बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि उसने तो ऐसे नाइट का नाम पहले कभी नहीं सुना था।

---

[29] Green Knight - A knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity – see his picture above.

[30] Translated for the words "Green Mounds" – small soil mounds on which grass was growing. Infact they were the graves.

पर क्योंकि वह अपनी बेटी की हर इच्छा पूरी करने का आदी था इसलिये उसने अपनी बेटी से कहा कि अगर उसको हरा नाइट कहीं मिल गया तो वह उसका सन्देश उसको जरूर दे देगा।

फिर उसने अपनी बेटी को विदा कहा और राजाओं की मीटिंग मे हिस्सा लेने के लिये अपनी यात्रा पर चल दिया।

उस मीटिंग में उसको बहुत सारे राजकुमार मिले, नौजवान कुलीन लोग और नाइट मिले पर हरा नाइट उसे कहीं नहीं मिला। इसलिये राजा अपनी बेटी का सन्देश भी उसको नहीं दे सका।

मीटिंग खत्म हो गयी थी सो राजा घर लौटने लगा। उसको ऊँचे ऊँचे पहाड़ पार करने थे, चौड़ी चौड़ी नदियॉ पार करनी थीं और घने जंगल पार करने थे।

एक दिन जब राजा अपने लोगों के साथ एक घने जंगल से गुजर रहा था तो वे सब एक बड़ी सी खुली जगह में आ गये जहॉ हजारों सूअर चर रहे थे। ये सूअर जंगली नहीं थे बल्कि पालतू थे। उनके साथ उनका चराने वाला भी था।

वह सूअर चराने वाला एक शिकारी की पोशाक पहने अपने कुत्तों से घिरा हुआ एक छोटे से टीले पर बैठा हुआ था। उसके हाथ में एक पाइप था जिसको वह बजा रहा था। सारे जानवर उसके संगीत को सुन रहे थे और उसका कहना मान रहे थे।

राजा को पालतू सूअरों के इस झुंड पर बड़ा आश्चर्य हुआ तो उसने अपना एक आदमी उस सूअरों के रखवाले के पास यह जानने के लिये भेजा कि वे सारे सूअर किसके थे।

उस रखवाले ने जवाब दिया कि वे सारे सूअर हरे नाइट के थे। यह सुन कर राजा को अपनी बेटी की बात याद आ गयी सो वह खुद उस आदमी के पास गया और उससे पूछा कि क्या वह हरा नाइट कहीं पास में ही रहता था।

उस सूअर चराने वाले ने जवाब दिया "नहीं, वह पास में तो नहीं रहता। वह तो वहॉ से बहुत दूर पूर्व की तरफ रहता था।"

अगर राजा उस दिशा की तरफ चला जाये तो उसको जानवरों के दूसरे झुंड चराने वाले मिलेंगे वे उसको उस हरे नाइट के किले का रास्ता बता देंगे।

राजा यह सुन कर अपने आदमियों के साथ पूर्व की तरफ चल दिया। वह उधर की तरफ जंगल में हो कर तीन दिन तक चलता रहा। वह फिर से एक मैदान में आ निकला जिसके चारों तरफ जंगल ही जंगल था।

वहॉ मूज़[31] और जंगली बैलों के बहुत बड़े बड़े झुंड चर रहे थे। यहॉ भी उन

[31] The moose (North America) or elk (Eurasia) is the largest extant species in the deer family. Moose are distinguished by the palmate antlers of the males; other members of the family have antlers with a "twig-like" configuration. Moose typically inhabit in forests of the Northern Hemisphere in temperate to subarctic climates – see its picture above.

जानवरों को चराने वाला शिकारी की पोशाक पहने था और उसके साथ भी कुत्ते थे। राजा अपने घोड़े पर सवार उस रखवाले के पास गया और उससे पूछा कि वे जानवर किसके थे। उसने जवाब दिया कि वे हरे नाइट के थे जो पूर्व की तरफ और आगे की तरफ रहता था।

राजा फिर से पूर्व की तरफ तीन दिनों तक चला और फिर से एक मैदान में निकल आया जहाँ उसको बहुत सारे नर और मादा बारहसिंगा[32] चरते नजर आये। उनका रखवाला भी उनके साथ था।

जब राजा ने उससे पूछा कि वे जानवर किसके हैं तो उसने भी यही कहा कि वे जानवर हरे नाइट के हैं।

राजा ने पूछा कि हरे नाइट का किला कहाँ है तो उसने बताया कि वह वहाँ से पूर्व की तरफ ही एक दिन की दूरी पर है।

राजा वहाँ से हरे हरे जंगलों में से हो कर जा रहे हरे हरे रास्तों पर फिर पूर्व की तरफ चला तो एक दिन में ही एक बड़े से किले तक आ पहुँचा। वह किला भी हरा था क्योंकि वह सारा किला बहुत सारी बेलों से ढका हुआ था।

[32] Translated for the word “Stag”. It is a kind of deer (male) and doe (female) with a different horn structure – see its picture above.

जब राजा और उसके आदमी सब उस किले के पास तक पहुँचे तो उस किले में से बहुत सारे आदमी शिकारियों की हरे रंग की पोशाक पहने बाहर आये और उनको किले के अन्दर ले गये। अन्दर जा कर उन्होंने घोषणा की कि फलॉ फलॉ राज्य के राजा आये हैं और वह वहॉ के राजा से मिलना चाहते हैं।

यह सुन कर उस किले का मालिक बाहर आया – एक लम्बा सुन्दर नौजवान हरे कपड़े पहने हुए। उसने अपने मेहमान का स्वागत किया और उसकी शाही तरीके से आवभगत की।

राजा बोला — "आप बहुत दूर रहते हैं और आपका राज्य भी बहुत बड़ा है। मुझको अपनी बेटी की इच्छा पूरी करने के लिये बहुत दूर तक चलना पड़ा।

जब मैं राजाओं की मीटिंग में हिस्सा लेने के लिये चला था तो मेरी बेटी ने मुझसे कहा था कि मैं उसकी तरफ से हरे नाइट को नमस्ते करूँ।

और यह भी कहा था कि मैं उसको कहूँ कि वह उसको कितना चाहती है और वह उसका इन्तजार कर रही है क्योंकि केवल वही एक उसको उसके दुखों से छुटकारा दिला सकता है।

मैं अपनी बेटी का यह एक बहुत ही अजीब सा काम ले कर चला था, क्योंकि मुझे तो यह काम कम से कम अजीब सा ही लगा पर मेरी बेटी जानती है कि वह क्या कह रही थी।

इसके अलावा जब उसकी माँ मर रही थी तब मैंने उसकी माँ से यह वायदा किया था कि मैं उसकी बेटी की हर इच्छा पूरी करूँगा। इसलिये भी मैं अपनी रानी से किया गया अपना वायदा निभाने के लिये और उसका सन्देश देने के लिये यहाँ आया हूँ।"

यह सुन कर हरा नाइट बोला — "आप की बेटी ने जब आपसे यह सब कहा तब वह बहुत दुखी थी और यह मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि जिस समय उसने आपको यह सन्देश दिया वह मेरे बारे में नहीं सोच रही थी। क्योंकि मेरे बारे में तो वह सोच ही नहीं सकती थी।

शायद वह चर्च के आँगन में जो मिट्टी के हरे ढेर बने रहते हैं उनके बारे में सोच रही थी जहाँ वह खुद अकेले आराम करना चाहती थी। पर शायद मैं उसको उसके दुख को कम करने के लिये उसके लिये आपको कुछ दे सकता हूँ।

आप यह छोटी सी किताब ले जाइये और जा कर राजकुमारी को दे दीजियेगा। और उससे कहियेगा कि जब भी वह दुखी हो या उसका दिल भारी हो तो वह अपनी पूर्व की तरफ की खिड़की खोले और यह किताब पढ़े। मुझे यकीन है कि इस किताब को पढ़ कर उसका दिल जरूर खुश होगा।"

यह कह कर उस हरे नाइट ने राजा को एक छोटी सी हरी किताब थमा दी। राजा ने उस किताब को खोल कर देखा तो वह

उसको पढ़ नहीं सका क्योंकि वह उसमें इस्तेमाल किये गये अक्षरों को ही नहीं पहचान सका जिसमें उसमें लिखे शब्द लिखे गये थे।

फिर भी उसने हरे नाइट से वह किताब ले ली और उसको उसके स्वागत और उसकी आवभगत के लिये धन्यवाद दिया। उसने नाइट को विश्वास दिलाया कि उसको वाकई बहुत अफसोस था कि उसने इस तरह आ कर उसको परेशान किया। राजकुमारी का ऐसी कोई इरादा नहीं था।"

हरे नाइट ने राजा से किले में रात भर ठहरने के लिये प्रार्थना की कि वह सुबह होते ही अपने राज्य चला जाये। असल में तो वह राजा को और ज़्यादा समय के लिये भी रखना चाहता था पर राजा ने उससे कहा कि वह और ज़्यादा नहीं रुक सकता था क्योंकि अगले दिन तो उसको जाना ही था।

सो अगले दिन सुबह राजा ने अपने मेज़बान को विदा कहा और उसी रास्ते से वापस चल दिया जिससे वह आया था। वह वहॉ तक आ गया जहॉ उसने सबसे पहले सूअर देखे था फिर वहॉ से वह सीधे अपने घर आ गया।

घर आ कर सबसे पहले वह उस टापू पर गया जिस पर उसकी बेटी रहती थी। वह वहॉ गया और जा कर राजकुमारी को वह हरी किताब दी।

जब राजा ने राजकुमारी को हरे नाइट के बारे में बताया और उसकी नमस्ते और हरी किताब दी तो उसका मुँह तो आश्चर्य से

खुला का खुला रह गया क्योंकि उसने तो कभी यह सोचा ही नहीं था कि हरा नाइट नाम का कोई आदमी भी होगा। और आदमी होना तो दूर वह इस धरती पर भी कहीं होगा।

उसी शाम जब उसके पिता चले गये तो उसने पूर्व की तरफ की खिड़की खोली और वह किताब पढ़नी शुरू की हालाँकि वह किताब उसकी अपनी भाषा में नहीं लिखी थी। उस किताब में बहुत सारी कविताऐं थीं और उनकी भाषा बहुत सुन्दर थी। सबसे पहले जो उसने पढ़ा वह यह था —

समुद्र पर हवा चल निकली है
वह खेतों पर और मैदानों पर बहती है
और जब धरती पर शान्त रात छाती है
नाइट के साथ कौन उसका विश्वास बाँधेगा?

जब वह इस पहली कविता की पहली लाइन पढ़ रही थी तो उसको साफ साफ लगा कि समुद्र पर हवा चलने लगी थी। जब उसने उस कविता की दूसरी लाइन पढ़ी तो उसने पेड़ों की पत्तियों के हिलने की आवाज सुनी।

जब उसने उस कविता की तीसरी लाइन पढ़ी तो उसकी जो दासियाँ थीं और जो भी किले के आस पास थे सब गहरी नींद में सो गये। और जब उसने कविता की चौथी लाइन पढ़ी तो वह हरा नाइट खुद चिड़िया का रूप रख कर खिड़की में से अन्दर आ गया।

अन्दर आ कर वह आदमी के रूप में आ गया और राजकुमारी को बहुत ही नम्रता से नमस्ते की। उसने राजकुमारी से कहा कि वह डरे नहीं।

उसने उससे यह भी कहा कि वह वही हरा नाइट था जिसके पास उसके पिता मिलने के लिये आये थे और जिसकी दी हुई किताब वह पढ़ रही थी।

उस कविता को पढ़ कर उसने उसको खुद ही वहॉ बुलाया था। बह उससे बेहिचक बात कर सकती थी। उससे बात करने से उसका दुख कुछ कम होगा।

यह सुन कर राजकुमारी को हरे नाइट के ऊपर कुछ विश्वास पैदा हुआ तो उसने उस हरे नाइट से अपने मन की सब बातें कह दीं।

उधर उस हरे नाइट ने भी उसके साथ इतनी सहानुभूति और प्यार से बातें कीं कि वह उसकी बातें सुन कर बहुत खुश हो गयी। इससे पहले वह इतनी खुश कभी नहीं थी।

बाद में हरा नाइट बोला कि जब भी वह किताब खोलेगी और वह पहली कविता पढ़ेगी तो वैसा ही होगा जैसा कि आज शाम को हुआ है।

राजकुमारी के सिवा टापू पर सारे लोग सो जायेंगे और वह वहॉ तुरन्त ही आ जायेगा जबकि वह वहॉ से बहुत दूर रहता था। राजकुमार ने कहा कि अगर वह उससे वाकई मिलना चाहेगी वह

उसके पास खुशी से आयेगा। अब वह उस किताब को बन्द करके रख दे और जा कर आराम करे।

उसी समय राजकुमारी ने किताब बन्द कर दी। किताब बन्द करते ही वह हरा नाइट भी वहॉ से गायब हो गया और टापू वाले सारे लोग जो सो गये थे वे सभी जाग गये। फिर राजकुमारी भी सोने चली गयी।

रात को सपने में भी वह हरे नाइट को ही देखती रही और जो कुछ उसने उससे कहा था वही उसके सपने में भी आता रहा। जब वह सुबह को उठी तो उसका दिल बहुत हल्का था और वह बहुत खुश थी। इतनी खुश वह पहले कभी नहीं हुई थी।

अब वह पहले से ज़्यादा तन्दुरुस्त रहने लगी थी। उसके गालों का रंग गुलाबी हो गया था और अब वह बात बात पर हॅसती और मजाक करती थी।

उसमें यह बदलाव देख कर उसके आस पास के लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ कि राजकुमारी को यह क्या हो गया है। राजा ने कहा कि शाम की हवा और उस छोटी सी हरी किताब ने उसकी ज़िन्दगी में यह बदलाव ला दिया है। राजकुमारी ने कहा कि वह ठीक कह रहा है।

पर यह बात कोई नहीं जानता था कि हर शाम राजकुमारी वह छोटी हरी किताब पढ़ती और हर शाम वह हरा नाइट उसके पास

आता और फिर वे दोनों बहुत देर तक बातें करते रहते और यही उसकी खुशी का भेद था।

तीसरे दिन हरे नाइट ने उसको एक सोने की अँगूठी दी और उन दोनों ने अपनी शादी पक्की कर ली पर तीन महीने से पहले वह उसका हाथ माँगने के लिये उसके पिता के पास नहीं जा सका। उसके बाद ही वह अपनी प्रिय पत्नी को अपने घर ले जा सकता था।

इस बीच राजकुमारी की सौतेली माँ को पता चला कि राजकुमारी की तन्दुरुस्ती तो बहुत अच्छी हो रही है और वह बहुत सुन्दर भी होती जा रही है। वह पहले से कहीं ज़्यादा खुश है।

रानी को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ और वह उदास हो गयी क्योंकि वह तो हमेशा से ही यह उम्मीद करती थी कि वह धीरे धीरे दुबली हो जायेगी और फिर मर जायेगी। उसके बाद उसकी अपनी बेटी राजकुमारी बन जायेगी और राज्य की वारिस बन जायेगी।

सो एक दिन उसने अपने दरबार की एक दासी को उस टापू पर राजकुमारी के पास भेजा और उसको कहा कि वह राजकुमारी की इस तन्दुरुस्ती और खुश रहने का भेद पता लगा कर लाये।

अगले दिन वह दासी लौट आयी और उसने आ कर रानी को बताया कि यह सब इसलिये हो रहा था कि राजकुमारी रोज शाम को

अपनी खिड़की खोल कर बैठ जाती थी और एक किताब पढ़ती थी जो उसको किसी अजीब से राजकुमार ने दी थी।

फिर शाम की हवा ने उसको गहरी नींद में सुला दिया और यह हर शाम उसके दरबार की सब स्त्रियों के साथ होता था कि वे सब शाम को इसी तरीके से सो जाती थीं।

उन्होंने उससे यह शिकायत भी की कि यह सब हालात उनको बीमार बना रहे थे जबकि वे ही हालात राजकुमारी की हालत अच्छी कर रहे थे।

अगले दिन रानी ने अपनी बेटी को राजकुमारी के ऊपर जासूसी करने के लिये भेजा और उसको कहा कि वह उसकी सारी हरकतों पर नजर रखे और आ कर उसे बताये।

उसने यह भी कहा कि "इस खिड़की में ही शायद कोई भेद छिपा है। शायद कोई आदमी इसमें से आता है। सो उस खिड़की पर ध्यान रखना।"

उसकी बेटी भी अगले दिन लौट आयी पर वह भी रानी को उससे ज़्यादा कुछ नहीं बता सकी जो उसकी दासी ने उसको बताया था। क्योंकि जैसे ही राजकुमारी ने अपनी खिड़की खोली और अपनी वह छोटी किताब पढ़नी शुरू की तो वह सो गयी।

यह सुन कर तीसरे दिन रानी खुद उससे मिलने के लिये गयी। वह राजकुमारी से बहुत ही मीठा व्यवहार कर रही थी। उसने

उसको दिखाया कि वह उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी देख कर कितनी खुश थी।

रानी ने उससे उतने सवाल पूछे जितने वह उससे पूछने की हिम्मत कर सकती थी। पर वह भी जितना उसको मालूम था उससे ज़्यादा और कुछ मालूम नहीं कर सकी।

उसके बाद वह उसकी पूर्व की खिड़की के पास गयी जहॉ वह राजकुमारी हर शाम बैठती थी और अपनी किताब पढ़ती थी। उस खिड़की की अच्छी तरह से जॉच की पर वहॉ भी उसको कोई ऐसी खास चीज़ नहीं मिली जिससे उसकी गुत्थी कुछ सुलझती।

वह खिड़की जमीन से काफी ऊपर थी और उसके आस पास बहुत सारी बेलें लगी हुई थीं जिससे उस पर किसी भी आदमी का चढ़ना नामुमकिन था।

सो रानी ने एक कैंची ली, उसकी नोकों में जहर लगाया और उसको उसकी नोकों को ऊपर करके खिड़की में अटका दिया पर उसने उसको ऐसे अटकाया कि वह वहॉ किसी को दिखायी न दे।

जब शाम हुई तो रोज की तरह से राजकुमारी अपने हाथ में वह हरी किताब ले कर उस खिड़की के पास बैठी तो रानी ने सोचा कि वह ध्यान रखेगी कि वह किसी तरह भी सोने न पाये जैसा कि पहले दूसरे लोग कर चुके थे पर जब राजकुमारी ने वह किताब पढ़नी शुरू की तो उसके इरादे ने उसकी कोई सहायता नहीं की।

जैसे ही राजकुमारी ने वह किताब पढ़ना शुरू किया तो रानी की पलकें अपने आप ही झुकने लगीं और सबके साथ साथ वह भी गहरी नींद सो गयी।

उसी समय हरा नाइट एक चिड़िया के रूप में वहॉ आया। उस के आने का किसी को पता नहीं चला सिवाय राजकुमारी के। फिर दोनों ने इस बारे में खूब बातें कीं कि बस अब हरे नाइट के राजा के पास जाने का केवल एक हफ्ता ही बचा था।

फिर वह नाइट राजा के दरबार में जा कर उससे राजकुमारी से शादी के लिये उसका हाथ मॉग लेगा। शादी करके वह उसे अपने घर ले जायेगा और फिर वह उसके हरे किले में हमेशा उसके पास रहेगी।

उसका यह हरा किला भी हरे हरे जंगलों के बीच में बना हुआ था जहॉ से उसका सारा राज्य दिखायी देता था और जिसके बारे में उसने राजकुमारी से कई बार बात की है। बात करने के बाद में हरे नाइट ने उस विदा ली, चिड़िया बना और खिड़की के बाहर उड़ गया।

पर उस समय वह इत्तफाक से उस खिड़की के ऊपर से इतना नीचे उड़ा कि रानी ने जो कैंची खिड़की में लगायी थी उसकी नोक से उससे उसकी एक टॉग में खरोंच आ गयी। उसके मुँह से एक चीख निकली पर फिर वह जल्दी ही वहॉ से उड़ गया।

राजकुमारी ने जब हरे नाइट की चीख सुनी तो वह कूद कर वहाँ गयी। इस कूदने में उसके हाथ से वह किताब नीचे फर्श पर गिर गयी और बन्द हो गयी। उसके मुँह से भी एक चीख निकली और रानी और सबकी आँख खुल गयी।

राजकुमारी की चीख की आवाज सुन कर सब राजकुमारी की तरफ दौड़े गये कि उसको क्या हुआ। उसने उनको बताया कि उसको कुछ नहीं हुआ था और वह ठीक थी। बस उसकी ज़रा सी आँख लग गयी थी तो उसी में उसने एक बुरा सपना देख लिया।

पर उसी समय से हरे नाइट को बुखार आ गया और उसको बिस्तर पर लिटा दिया गया।

इसी बीच रानी खिड़की में से अपनी कैंची निकालने के लिये खिड़की तरफ खिसक गयी। वहाँ जा कर उसने देखा कि उसकी कैंची की नोक पर तो खून लगा है। उसने उसको तुरन्त ही वहाँ से निकाल कर अपने कपड़ों में छिपा लिया और अपने घर ले गयी।

उधर राजकुमारी सारी रात सो नहीं पायी और दूसरे दिन भी बहुत परेशान रही। फिर भी वह कुछ ताजा हवा लेने के लिये खिड़की के पास जा बैठी।

उसने अपनी पूर्व वाली खिड़की खोली अपनी किताब खोली और रोज की तरह से उसमें से पढ़ने लगी।

समुद्र पर हवा चल निकली है,
वह खेतों पर और मैदानों पर बहती है,

और जब धरती पर शान्त रात छाती है,
नाइट के साथ कौन उसका विश्वास बॉधेगा?

और हवा पेड़ों के बीच से बह निकली, पेड़ों की पत्तियॉ की सरसराहट भी सुनायी दी, राजकुमारी के सिवा उस टापू के सभी लोग सो गये पर हरा नाइट नहीं आया।

इस तरह कई दिन निकल गये। राजकुमारी रोज उस खिड़की को खोल कर बैठती, रोज अपनी किताब पढ़ती, रोज हवा की आवाज सुनती, रोज हवा से होती पत्तों की सरसराहट सुनती पर हरा नाइट नहीं आता।

उसके लाल गाल फिर से पीले पड़ने लगे और उसका दिल फिर से दुखी और नाखुश हो गया। वह फिर से दुबली होने लगी। उसके पिता को यह देख कर बहुत चिन्ता हो गयी कि उसकी हॅसती खेलती बेटी को क्या हो गया पर उसकी सौतेली मॉ को इस बात से बहुत खुशी हुई।

एक दिन राजकुमारी अपने टापू के किले के बागीचे में उदास घूम रही थी। घूमते घूमते वह थक गयी सो थक कर वह एक बहुत ऊॅचे पेड़ के नीचे पड़ी बैन्च पर बैठ गयी। वहॉ वह बैठी बैठी बहुत देर तक अपने उदास विचारों में खोयी रही कि वहॉ दो रैवन[33] आये

[33] Raven is a black crow-like bird – see its picture above.

और उसके सिर के ऊपर की एक शाख पर आ कर बैठ गये और आपस में बात करने लगे।

एक बोला — "यह कितने दुख की बात है कि हमारी राजकुमारी अपने प्रेमी के दुख में जान देने को भी तैयार है।"

दूसरा रैवन बोला — "और जबकि केवल वह ही उसका वह घाव ठीक कर सकती है जो हरे नाइट को रानी की जहरीली कैंची से हुआ है।"

पहले रैवन ने पूछा — "वह कैसे?"

दूसरे रैवन ने जवाब दिया — "एक सी चीज़ें एक दूसरे को ठीक करती हैं। राजकुमारी के पिता राजा के ऑगन में, उसकी घुड़साल के पश्चिम की तरफ एक पत्थर के नीचे एक बिल में एक ज़हरीली सॉपिन अपने नौ बच्चों के साथ रहती है।

अगर राजकुमारी को उसके ये नौ बच्चे मिल जायें तो वह उनको पका ले और उसके तीन बच्चे रोज राजकुमार को खिलाये तो वह ठीक हो जायेगा नहीं तो उसका कोई और इलाज नहीं है।"

इतना कह कर वे वहॉ से उड़ गये। जैसे ही रात हुई तो राजकुमारी अपने किले से छिप कर निकल ली और समुद्र के किनारे जा पहुँची। वहॉ उसको एक नाव मिल गयी। उस नाव को खे कर वह अपने पिता के महल जा पहुँची।

वहॉ वह सीधी महल के ऑगन में पत्थर के पास पहुँची। वह पत्थर बहुत भारी था फिर भी उसने उसको हटाया। वहॉ उसको नौ सॉप के बच्चे मिल गये।

उसने उन बच्चों को अपने ऐप्रन में बॉध लिया और उसी रास्ते पर चल दी जो उसके पिता ने जब वह राजाओं की मीटिंग में गया था लिया था।

सो वह महीनों तक पैदल चलती हुई ऊँचे पहाड़ों पर और घने जंगलों में होती हुई वहीं आ गयी जहॉ उसके पिता को सूअरों को झुंड मिला था।

उसने राजकुमारी को जंगलों में से हो कर उस तरफ जाने के लिये इशारा कर दिया जिधर दूसरा चराने वाला था। दूसरे चराने वाले के पास पहुँचने पर उस दूसरे चराने वाले ने उसको तीसरे चराने वाले के पास भेज दिया।

आखिर वह हरे नाइट के महल तक आ पहुँची। वहॉ हरा नाइट जहर से बीमार और बुखार में पड़ा हुआ था। वह इतना बीमार था कि वह किसी को पहचान भी नहीं रहा था। उसको उस घाव की वजह से इतना दर्द था कि वह बिस्तर में भी बहुत बेचैन था।

दुनियॉ के कोने कोने से डाक्टर बुलाये गये थे पर किसी भी डाक्टर का कोई इलाज उसको जरा सा भी आराम नहीं दे पाया था।

राजकुमारी हरे नाइट के रसोईघर में गयी और वहॉ रसोइये से पूछा अगर वह उसको शाही रसोई में कुछ काम दे सकता। वह बरतन धो सकती थी या फिर कुछ और जो काम भी वह उसको देना चाहता हो। बस उसको रहने की जगह चाहिये थी। रसोइये ने उसको वहॉ रहने की इजाज़त दे दी।

क्योंकि वह बहुत साफ रहती थी, काम बहुत जल्दी करती थी और कोई भी काम करने के लिये तैयार रहती थी रसोइये को वह राजकुमारी बहुत अच्छी लगी। उसने उसको वहॉ का काम करने में उसको काफी आजादी दे दी।

रसोइये का यह विश्वास जीतने के बाद राजकुमारी ने रसोइये से कहा — "आज मुझे राजा के लिये सूप तैयार करने दो। मुझे अच्छी तरह से मालूम है कि उनके लिये सूप कैसे तैयार करना है। मैं उस सूप को अकेले ही तैयार करना चाहती हूँ। कोई भी मेरे बरतन में झॉके नहीं।"

रसोइया मान गया सो उसने नाइट के लिये उन नौ सॉपों के बच्चों में से तीन सॉप के बच्चों का सूप बना दिया। वह उस सूप को लेकर हरे नाइट के पास ले गयी और वह सूप उसको पिला दिया।

सूप पी कर उसका बुखार इतना उतर गया कि वह अब अपने होश में आ गया, अपने चारों तरफ के सब लोगों को पहचानने लगा और ठीक से बातें करने लगा।

उसने अपने रसोइये को बुलाया और उससे पूछा — "यह सूप क्या तुमने पकाया था जिसने मुझे इतना फायदा किया?"

रसोइये ने जवाब दिया — "जी हॉ मैंने ही बनाया था क्योंकि कोई और दूसरा तो आपके लिये सूप बना ही नहीं सकता था।" तब हरे नाइट ने उसको अगले दिन वैसा ही सूप और बनाने के लिये कहा।

अब रसोइये की बारी थी राजकुमारी के पास जाने की और उससे कहने की कि वह नाइट के लिये कल जैसा ही सूप बना दे।

सो उसने उस दिन भी तीन सॉप के बच्चे लिये, उनका सूप बनाया और उनका सूप बना कर हरे नाइट के पास ले गयी और उसको पिलाया। अबकी बार उस सूप को पी कर हरे नाइट को इतना अच्छा लगा कि वह बिस्तर से उठ कर खड़ा हो गया।

यह देख कर तो डाक्टर लोग हैरान रह गये। वे समझ ही नहीं सके कि यह सब कैसे हो गया। पर उनको यकीन था कि अब तक वे जो दवाऐं हरे नाइट को दे रहे थे वे उसके ऊपर अब असर कर रही थीं।

तीसरे दिन रसोईघर की नौकरानी को फिर से वह सूप तैयार करना पड़ा। इस सूप में उसने वे आखिरी तीन सॉप के बच्चे डाल दिये और वह सूप फिर हरे नाइट के पास ले कर गयी। उस सूप को पीने के बाद तो हरा नाइट बिल्कुल ही ठीक हो गया।

वह कूदा और रसोईघर में रसोइये को खुद धन्यवाद देने के लिये गया क्योंकि वही तो उसका असली डाक्टर था जिसने उसको ठीक किया था।

अब हुआ क्या कि जैसे ही वह रसोईघर में पहुँचा तो वहाँ तो एक नौकरानी के अलावा और कोई था नहीं और वह नौकरानी भी उस समय बरतन पोंछ रही थी।

जैसे ही उसने उसको देखा तो वह उसको पहचान गया। तुरन्त ही उसको लगा कि उस लड़की ने उसके लिये क्या किया है। उसने उस लड़की को अपनी बाँहों मे ले लिया और बोला —

"ओह तो वह तुम हो जिसने मेरा इलाज किया है। मेरी जान बचायी है। और मेरे शरीर के अन्दर जो जहर घुस गया था उससे छुटकारा दिलाया है। यह जहर मेरे शरीर में तब घुसा था जब मेरे खिड़की में रखी कैंची की खरोंच लगी जो रानी ने वहाँ रखी थी।"

राजकुमारी इस बात से मना नहीं कर सकी। वह बहुत खुश थी और साथ में हरा नाइट भी।

दोनों की शादी उस हरे किले में ही हो गयी और फिर दोनों ने वहाँ के हरे जंगलों मे रहने वालों पर बहुत सालों तक राज किया। और शायद अभी भी वहाँ राज कर रहे होंगे।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**1**
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**2**
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
4 रैवन की लोक कथाऐं–**1**

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — **10** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — **45** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–**1** — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2** — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–**4**
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–**5**
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–**6**
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–**7**
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–**8**
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–**9**
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–**10**
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**